सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मई, 2013 | वर्ष 12 | अंक 03

सत्य वचन

पूज्य तो केवल अल्लाह है
उसके अतिरिक्त पूज्य नहीं
नबी मुहम्मद अन्तिम हैं
पीछे उनके नबी नहीं
नबी मार्ग से पाओ मुक्ति
बिना नबी के मुक्ति नहीं
शिर्क पाप से बचो सदा
मुशरिक की तो मुक्ति नहीं
मानव सेवा काम बड़ा
कमी तुम उसमें करो नहीं
नबी पे हरदम रब की कृपा
सल्लल्लाहु अ़लन्नबी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
इत्तिहाद	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	ह0 मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	8
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़र मौलाना अली मियां नदवी रह0	12
तीन कुव्वतों की ज़रूरत	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	14
यादों के झरोखे से	नज़मुस्साकिब अब्बासी नदवी	17
इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	18
पैकरे अख़्लाख़ हजरत मौलाना	डॉ0 देवनाथ चतुर्वेदी	19
दिन–रात ऋतुऐं	डॉ0 इसपाक अली	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	25
डॉ0 मेलर की राय कुर्आन के बारे में	जावेद अख़तर	29
औरंगज़ेब और धार्मिक स्वतंत्रता	मतीन तारिक बाग़पती	33
कब्ज और नारियल का तेल		36
अक़ाइद मंजूम		38
प्रिय पाठकों की सेवा में		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकरः

अनुवाद :-

अनिवार्य हुआ तुम पर युद्ध[1], और वह तुमको बुरी लगती है[2], और शायद कि तुमको बुरी लगे एक चीज़ और वह बेहतर हो तुम्हारे हक़ में और शायद तुमको भली लगे एक चीज़ और वह बुरी हो तुम्हारे हक़ में, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[3(316)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. अर्थात इस्लाम (दीन) के शत्रुओं से लड़ना अनिवार्य हुआ।

फाइदा:- जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में रहे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को युद्ध की आज्ञा न हुई जब मदीने की ओर हिजरत की तो जंग की इजाज़त मिली मगर उन काफिरों से जो स्वयं मुसलमानों से युद्ध करें। इसके बाद सामान्य रूप से युद्ध की आज्ञा मिल गई और जिहाद फर्ज़ हुआ कि यदि इस्लाम विरोधी मुसलमानों पर चढ़ाई करें तो मुसलमानों पर जिहाद फर्ज़े ऐन हैं वर्ना फर्ज़े किफाया बशर्ते कि जिहाद की सभी शर्तें जो इस्लामी संविधान में पाइ जाए। हां जिन लोगों से मुसलमान, सन्धि, अनुबंध कर लें अथवा उनकी अमन व सुरक्षा में आ जाएं तो उनसे युद्ध करना या उनके मुक़ाबले में उनके किसी विरोधी को सहायता देना कदापि मुसलमानों को जायज़ नहीं।

2. बुरे लगने का तात्पर्य ये है कि मन को भारी मालूम होता है, ये नहीं कि रद और इन्कार करने योग्य नज़र और हिक्मत मसलेहत के मुखालिफ समझा जाए। इतनी बात में कोई इल्ज़ाम नहीं। जब इन्सान को फितरी ज़िन्दगी से बढ़ कर कोई चीज़ रुचि नहीं तो ज़रूर लड़ाई से अधिक कठिन कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए।

3. अर्थात ये बात ज़रूरी नहीं की जिस चीज़ को तुम अपने हक में फायदेमन्द या नुकसान देह समझो वह वास्तव में भी तुम्हारे हक में वैसे ही हुआ करे बल्कि हो कसता है कि तुम एक चीज़ को अपने लिए नुकसान देह समझो और वह मुफीद हो और किसी चीज़ को मुफीद समझो और वह नुक़सान देह हो तो, तुमने समझ लिया कि जिहाद में जान व माल का नुकसान और तर्के जिहाद में दोनों की हिफाजत, और ये न जाना कि जिहाद में दुनिया और आखिरत के क्या–क्या फायदे हैं और उसके छोड़ने से क्या–क्या नुकसान हैं। तुम्हारे नफा–नुकसान को खुदा ही खूब जानता है, तुम उसे नहीं जानते। इसलिए वह जो आदेश दे उसको हक़ समझो और अपने इस ख़्याल को छोड़ दो। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जमाअत की नमाज़ का सवाब घर और बाज़ार की नमाज़ से पच्चीस गुना ज़्यादा है, मगर ये उस समय जब कि अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर मस्जिद जाए और सिर्फ नमाज़ का ही शौक उसको मस्जिद लाया हो तो एक कदम एक ख़ता मिटा देगा और दूसरा कदम एक दरजा बुलन्द करेगा और जब तक वह नमाज़ पढ़ता रहता है, फरिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं जब तक वुज़ू न टूटे, "ऐ अल्लाह! उसको मॉफ करदे और उस पर रहम कर, और जब तक नमाज़ का इन्तेज़ार करेगा नमाज़ ही में शुमार होगा। (बुख़री—मुस्लिद

जमाअ़त की अहमियत—

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि एक दृष्टि हीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे मस्जिद तक लाने वाला कोई नहीं, यदि आप इजाज़त दें तो मैं घर पर नमाज़ पढ़ लिया करूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज्ञा दे दी। जब वह चले गए तो आपने उनको बुलाकर कहा कि तुम अज़ान की आवाज़ सुनते हो? कहा जी हाँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि फिर तो तुम मस्जिद ही आया करो। (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ि0 कहते हैं कि उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि मदीने में ज़हरीले जानवर और दरिन्दे बहुत हैं और मैं दृष्टिहीन हूँ, क्या मुझे जमाअत में शामिल न होने की इजाज़त मिल सकती है? हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम "हय्या अलस्सलाह, हय्या अलल्फलाह की आवाज़ सुनते हो? कहा हाँ, फरमाया फिर तो तुम ज़रूर आओ और इजाज़त न दी।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कसम है उसकी जिसके कब्ज़े में मेरी जान है मैंने ये इरादा किया कि किसी को लकड़ियां इकट्ठा करने का आदेश दूं, फिर मुअज्ज़िन को अज़ान कहने का हुक्म दूँ, फिर एक आदमी इमामत के लिए तैयार करुँ, फिर जो जमाअत में शरीक न हों उनके घरों को आग लगा दूँ।

बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 कहते हैं कि जिस आदमी को इसका शौक हो कि वह कयामत के दिन मुसलमान की तरह अल्लाह के सामने पेश हो वह पाँचों वक्त की नमाज़ मस्जिद में जहाँ अज़ान दी जाती है जमाअत के साथ अदा करे। (मुस्लिम) ❑❑

इत्तिहाद (एकता)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और बाहम फूट न पैदा करो (कुर्आन, आले इमरानः 103) और आपस में झगड़ो नहीं वरना तुम में बुज़दिली (कायरता) आएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (तौबाः 46)।

कुर्आन मजीद की इन दोनों आयतों में आपस में झगड़ने और फूट डालने से रोका गया है और मिलजुल कर इत्तिहाद तथा एकता से रहने को कहा गया है। पहली आयत में अल्लाह की रस्सी थामने, मजबूत पकड़ने की तालीम है और लड़ कर अलग अलग हो जाने से रोका गया है। यहाँ अल्लाह की रस्सी से मुराद इस्लाम की उसूली (मौलिक) बातें हैं। अर्थात अल्लाह व रसूल की इताअत है। दूसरी सूर—ए—तौबा वाली आयत में कहा गया है कि आपस में मत लड़ो, मत झगड़ो, और बाहम झगड़ने का नतीजा यह बताया गया है कि फिर तुम्हारे अन्दर बुज़दिली, (कायरता) आजाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी यानी फिर तुम्हारी कोई हैसियत न रह जाएगी, तुम्हारा कोई रोब न रह जाएगा समाज में तुम्हारा कोई मक़ाम न रहेगा, लेकिन इस तालीम से पहले आयत में "अती उल्लाह व रसूलहू" आया है यानी अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करो, इसमें साफ इशारा मिलता है कि हबलुल्लाह (अल्लाह की रस्सी से मुराद अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त है।

इल्मी इख़्तिलाफ राय (ज्ञानिक मतभेद) और है और बाहम झगड़ कर एक दूसरे को बुरा कहना और बात है। एक हुक्म के दो मतलब निकल सकते हैं, दोनों मतलबों में हुक्म से इन्कार नहीं है बस अगर हुक्म मान लेना है तो रब की रस्सी हाथ में है चाहे हुक्म के अलग —अलग मतलब लिए जा रहे हों। अलबत्ता अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकाम के जितने मतालिब (अर्थ) हो सकते हैं वह अब मुतअय्यन नियुक्त और उम्मत में मुसल्लम (स्वीकृत प्राप्त) है वह मुदव्वन (संगृहीत) है। और उनके अपनाने वाले ज़ाहिर है यानी अहले हदीस, हनफी, मालिकी, शाफई और हंबली, यह सबके सब गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) नहीं, सब गवाही देते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं और सब नमाज़ रोज़ा ज़कात और हज को अरकाने इस्लाम मानते हैं सब मानते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह की आख़िरी किताब कुर्आने मजीद उतरी, जो पूरी तरह महफूज़ (सुरक्षित) है उस में एक लफ़्ज़ की कमी बेशी

नहीं हुई, अल्लाह ने उसकी हिफाज़त का वादा फरमाया है और ऐसा इन्तिज़ाम फरमा दिया है कि उसमें कमी बेशी करना बल्कि ज़बर ज़ेर का फर्क़ करना भी नामुमकिन है किराअ़ात का इख़्तिलाफ़ तहरीफ़ (अदल बदल करना) नहीं है सब मानते हैं कि कुर्आन मजीद की एक एक बात हक़ है, कुर्आन मजीद में जन्नत का ज़िक्र है, दोज़ख़ाक का जिक्र है, फरिश्तों का ज़िक्र है, जिन्नात का ज़िक्र है मज़कूरह (उक्त) पाँचों गिरोह इन सब को हक मानते हैं कियामत और उसकी तफ़्सीलात को सब मानते हैं, कुर्आन मजीद की एक एक बात को सच जानते हैं, सब मानते हैं कि अल्लाह के रसूल की पैरवी ही में नजात है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के अहकाम (आदेश) बन्दों तक पहुंचाए उनका अमली नमूना पेश किया, सब मानते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन से मुतअल्लिक एक एक अमल और एक एक क़ौल (कथन) हदीस की किताबों में महफूज़ है सब मानते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो बात वाज़ेह तौर पर स्पष्ट रूप में साबित हो उसका मानना जरूरी है सब मानते हैं कि अल्लाह ने अपने बन्दों की हिदायत के लिए बहुत से पैगम्बर भेजे जब और जहाँ जो पैग़म्बर भेजा गया वहाँ के लोगों की नज़ात उनके पैग़म्बर की इताअत ही में थी, सारे रसूल बर हक़ हैं, लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरी पैग़म्बर हैं अब कियामत तक कोई नया नबी न आएगा, अलबत्ता हजरत ईसा अलैहिस्सलाम कियामत के क़रीब दज्जाल को क़त्ल करने के लिए आसमान से उतारे जाएंगे वह उस वक्त भी नबी होंगे इस लिए की कोई नबी नबी बनाये जाने केबाद माजूल (पदच्युत) नहीं होता अलबत्ता वह जितने दिन इस दुनिया में रहेंगे आखिरी नबी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत पर अमल करेंगे, पस आप के अलावा अब आख़िरी नबी के बाद कियामत तक जो किसी भी किस्म की नुबूवत का दावा करेगा वह झूठा है यह सारी बातें ऊपर की पाँचों जमाअतें मानती हैं सबके सब तक़दीर पर भी ईमान रख़ते हैं कि अच्छी हो या बुरी अल्लाह ही की तरफ़ से है यही अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ना है, अलहम्दुलिल्लाह पाँचों जमाअ़तें अल्लाह की रस्सी मज़बूत पकड़े हुए हैं मुआ़शरती मसाइल (सामाजिक बातें) में भी पाँचों जमाअतों में कोई फ़र्क़ नहीं, निकाह के बिना किसी औरत से तअल्लुक बहुत बड़ा और सख़्त सजा वाला गुनाह है। किन औरतों से निकाह जाइज़ (वैध) और किनसे नाजाइज़ (अवैध) है इसमें भी मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं। निकाह के तरीक़े में लड़की की इजाज़त लेना दो मुस्लिम गवाहों के सामने ईजाब व क़बूल होना, महर का होना सबके यहाँ जरूरी है। जिन जानवरों का गोश्त खाना हलाल है इसमें भी सब मुत्तफिक़ हैं, सबके नजदीक हलाल जानवर जब

तक मुसलमान के हाथ से अल्लाह का नाम लेकर ज़बह न किया गया हो उसका खाना हलाल नहीं है, मछली और टिड्डी सबके नजदी ज़ब्ह के बिना हलाल है। शराब सब के यहाँ हराम है, जुआ खेलना नाच, बाजा सबके यहाँ हराम है, सूद का लेन देन, रिश्वत का लेन देन सबके यहां हराम है, गीबत करना, झूठ बोलना धोखा देना, नाहक किसी की जान लेना, चोरी, डकैती, ज़िना ग़बन को सब हराम कहते हैं। दहशत गर्दी, जुल्म फसाद (उपद्रव) सबके यहां मना है। मगर अफसोस आयत के दूसरे जुज पर अमल न करने में बड़ी कोताहियाँ हैं।

कहीं इमाम के पीछे सूर–ए–फातिहा पढ़ने की लड़ाई है, कहीं ज़ोर से आमीन पढ़ने का झगड़ा है, कहीं तरावीह़ की रकअ़तों का झगड़ा है कहीं तीन तलाक़ों का लफड़ा है, हालांकि सब के पास किताब व सुन्नत की दलीलें हैं, चाहिए कि जब बुनियादी (मौलिक) बातों में मुत्तफिक़ (सहमत) हैं तो कुछ फुरूई व दाख़िली (आंतरिक) बातों के इमकानी इख़्तिलाफात (साम्भाविक मतभेदों) में झगड़ना न चाहिए। और बड़े अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है कि हमारे कुछ उलमा ने बुनियादी बातों को मॉनते हुए अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अकीदत व मुहब्बव से मगलूब हो कर दीन में कुछ ऐसी नई बातें निकाल लीं जिनको न अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिखाया न सहाब–ए–किराम की ज़िन्दगी में उनका वजूद है। जब उन बातों पर इल्म वालों ने नकीर की तो बजाए इसके कि उनकी बात पर गौर करके नई बातों से अलग हो जाते। उलटे उन्होंने उन इल्म वालों की मुख़ालफ़त शुरु करदी और जब देखा कि वह इल्म वाले अवाम को समझाने में कामयाब हो रहे हैं तो उनके खिलाफ़ बाज ऐसी बातें गढ़ी और बयान की कि सादा लौह दीनदार उन इसलाह करने वालों को बुरा समझने लगे और उम्मत में भारी फूट पड़ने लगी जिसे आज बरेलवी, देवबन्दी झगड़ा कहा जाता है। इन दोनों गुटों के उलमा में इत्तिहाद बहुत मुशकिल हो गया है। फिर भी देवबन्दी बुजुर्गों से कहना चाहिए कि हर बरेलवी शिर्क को बुरा जानता है और अकीदा रखता है कि मुशरिक की बखशिश न होगी, ऐसी सूरत में उनके जो आमाल शिर्किया लग रहे हैं हिकमतों से उनकी इस्लाह चाहिए और उनको मिलाने की कोशिश जारी रखना चाहिए साथ ही जब हर एक देवबन्दी अल्लाह व अल्लाह के रसूल की इहानत को बुरा जानता है बल्कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इहानत को कुफ्र जानता है तो वह खुद इहानत कैसे कर सकता है उनके कलाम को समझना चाहिए और आपस में मेल रखना चाहिए, जिद बुरी है खुद मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब ने "तम्हीदे ईमान" में मौलाना इस्माई शहीद को काफिर कहने से गुरेज़ किया है।

शेष पृष्ठ.....11 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

बनू मुस्तलिक का मामला–

शाबान सन् 6 हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इत्तिला मिली की बनू मुस्तलिक जो खुज़अः की एक शाख थे जंग के लिए जमा हो रहे हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज़ीद तहकीक के लिए हज़रत ज़ैद बिन खुसैब रज़ि0 को भेजा, उन्होंने वापस आ कर खुबर की तसदीक़ की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मुकाबले के लिए तशरीफ ले चले, मुकाम मरीसी (बनू मुस्तलक का चश्मा) में खबर पहुंची की हारिस अबी ज़रार (क़बीला बनू मुस्तलिक का सरदार) की पार्टी तितर बितर हो गई और वह खुद किसी तरफ निकल गया, लेकिन मरीसी में जो लोग रहते हैं वह लड़ने पर कमर बस्ता हैं और उन्होंने पूरी तैयारी कर ली, चूनांचे मुकाबला हुआ और मुसलमानों की जीत हुई[1]।

1. तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

हज़रत जुवैरिया से आपका निकाह–

शिकस्त (पराजय) के बाज बनू मुस्तलिक बेसहारा हो गए और बेचारगी की हालत में आ गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन पर एहसान करते हुए उनके लीडर हारिस बिन ज़रार की बेटी जुवैरिया जो कि बान्दी की हैसियत से मुसलमानों के कब्ज़े में आ गई थीं, आज़ाद फरमा दिया और फिर मज़ीद यह एहसान फरमाया कि उनको अपने निकाह में भी ले लिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस दिलदारी का यह असर हुआ कि सब मुस्तलिकी मुसलमान हो गए और मुसलमानों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह रवय्या देख कर उनके इख़्तियार में आए हुए गुलाम व बान्दी आज़ाद कर दिये। इस तरह यह वाकिया बड़ा बाबरकत साबित हुआ[1]।

1. तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

मुनाफिक़ीन की फित्नाअंगेज़ी (उपद्रवकारी) और वाकिया इफ़्क–

इस ग़ज़वे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुनाफ़िक़ीन की एक तादाद थी, जिनका निफ़ाक़ छिपा हुआ था और वह दूसरे मुसलमानों की तरह समझे जाते थे, इतनी तादाद इससे पहले किसी ग़ज़वे में नहीं हुई थी, जब इस्लाम के दुश्मनों को जिनमें पोशीदा तौर पर यह मुनाफ़िक़ीन शामिल थे, यह यकीन हो गया कि मुसलमानों को अब मैदाने जंग में बड़ी तादाद और साज़ व सामान से शिकस्त नहीं दी जा सकती तो मुनाफ़िक़ीन ने दाख़िली महाज़ में रखना अंदाज़ी और फितना परदाज़ी का रास्ता इख़्तियार किया, मुसलमानों में तफ़रक़ा पैदा करने के लिए मोहतरम शख़्सियतों के मुकाम को गिराने और आपसी ऐतमाद (विश्वास) को कमज़ोर करने का रास्ता इख़्तियार

किया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत के बुलन्दतरीन मक़ाम पर हरफगिरी (आक्षेप) की, और उस पर मुसलमानों के ऐतमाद व यक़ीन को कमज़ोर करने का मंसूबा बनाया और काशान–ए–नबुअत के खिलाफ ज़बानदराज़ी और इल्ज़ामतराशी की मुहिम चलाने का मौक़ा निकाला।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत आईशा रज़ि0 रास्ते में एक सुबह सवेरे कज़ाए हाजत के लिए तशरीफ ले गईं और वापसी पर देखा कि क़ाफ़िला रवाना हो चुका है, क़ाफ़िला उनको उनके ऊँट में होने का ख़्याल करके उनके बग़ैर रवाना हो गया, फिर वह एक सहाबी की मदद से क़ाफ़िले में पहुंच गयीं सिर्फ इसी उनके काफिले से जुदा होने को बहाना बना कर उन पर तोहमत लगाई गयी यह एक निहायत खतरनाक और गहरी साज़िश थी और यह ग़ज़वे बनी मुस्तलिक में जिस तरह खुल कर सामने आई किसी और ग़ज़वे में न आई थी।

इस वाक़िये का तज़किरा वाकिया इफ़्क के (यानी झूठी तोहमत लगाने का वाक़िया) के नाम से मिलता है।

यह नाशाईस्ता वाकिया (असभ्य हरकत) इसी ग़ज़वे में पेश आई, मुनाफ़िक़ीन ने शक व शुब्हः पैदा करके उस पर तरह–तरह की रायज़नी की और फिर मदीना पहुंच कर मुसलसल इसका चर्चा किया। इस साज़िशी तोहमत से कुछ सादा दिल मुसलमान भी मुतासिर हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस तकलीफ़ दे ह सूरतेहाल से थोड़ी मुद्दत गुज़रना पड़ा, बिल आखिर अल्लाह तआला की तरफ से "वही" के ज़रिये उनकी बराअत (पवित्रता) के ऐलान के साथ इल्ज़ाम लगाने वालों की शरपसंदी पर सख़्त नकीर की गई, कि एक पाक दामन खातून फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भरोसेमन्द बीवी होने पर भी शुबहः किया गया और इसको यक़ीनी बना कर पेश किया गया, कुर्आन मजीद की आयतों के ज़रिये उसकी तरदीर (खण्डन) हुई और मज़ीद यह कि बिला तहकीक तोहमत लगाने की सज़ा तोहमत लगाने वालों को दी गई। जैसा कि सही, मुस्लिम वग़ैरह में ज़िक्र किया गया है। इस आसमानी तरदीद से पहले करीब था कि मुनाफिकीन अपनी घिनौनी साज़िश में कामयाब हो जाते, और ख़ानदाने नबवी के बुलन्द मकाम को शक के दायरे में ले आते, लेकिन सात आसमानों के ऊपर से हज़रत आईशा रज़ि0 के बराअत का ऐलान आ गया। इस तरह ज़बरदस्त फितने का हमेशा के लिए खात्मा हो गया।

"जिन लोगों ने बोहतान बांधा है तुम्हीं में से एक जमाअत है, इस वाकिये को तुम अपने लिए बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए ख़ैर बन गया है (यानी ऐसे मौक़े के लिए तुमको एहतियात करने की सख़्त तल्कीन (उपदेश) करके ऐसे मामले में बेएहतियाती का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया है)" उनमें से जिस शख़्स ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उतना

ही वबाल है, और जिसने उनमें से इस बोहतान का बड़ा बोझ उठाया है उसको बड़ा अज़ाब होगा, जब तुमने वह बात सुनी तो मोमिन मर्दों और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान नहीं किया और यह क्यों नहीं कहा कि यह खुली हुई बोहतान तराशी है"। सूरा नूरः 11–12)

उमरा अदा करने के लिए मक्का मुकर्रमा का सफ़र और सुलह हुदैबिया–

ग़ज़व–ए–अहज़ाब में जिसे ग़ज़वे ख़ंदक़ भी कहते हैं, मक्के के कुफ़्फ़ार व मुशरीकीन और मदीने के यहूद व मुनाफिकीन सब मिल कर मुसलमानों के खिलाफ़ सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) हुऐ थे लेकिन उन्हें अपने मन्सूबे बन्दी में खुली नाकामी हुई और वह मायूस व दिलबरदाश्ता (दुखी) हो कर वापस होने पर मजबूर हो गए थे, इसी तरीके से मुसलमानों की ताकत और मुकाबले की सलाहियत का अंदाज़ा कुरैश को हो गया और उसके बाद कुरैश ने किसी बड़ी मुहिम का मंसूबा नहीं बनाया लेकिन छेड़छाड़ की बातें उनकी तरफ से होती रहीं और ज़हां जहां से खतरात का इल्म होता रहा वहां मुसलमानों की तरफ से उसकी रोकथाम की कोशिश की जाती रही, चूंनाचे उन पर यह बात अच्छी तरह साफ हो गई कि मुसलमान अब मज़बूत हालत में हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लंम मक्के में दाखिल हुऐ और बैतुल्लाह का तवाफ किया। एक सच्चा ख़्वाब था लेकिन उसमें ज़माना, महीना और साल का तअय्युन (निर्धारण) न था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम को मदीने में यह ख़्वाब सुनाया, यह खुशखबरी सुन कर सब लोग बहुत खुश हुए। मक्का और काबा (जिसकी मुहब्बत व अज़मत उनकी फितरत में शामिल, उनके रग व रेशे में पैवस्त थी) मुद्दत हुई वह उससे महरूम थे, उनके दिल में काबे की ज़ियारत और उसके तवाफ का बड़ा इश्तियाक़ (उल्लास) था, और वह बहुत बेचैनी से उस दिन के मुन्तज़िर थे, यह सआदत उनको दुबारा हासिल हो, मुहाजिरीन में मक्के का इश्तियाक़ कुदरती तौर पर बहुत ज़्यादा था, इसलिए कि वह वहीं पैदा हुए और पले बढ़े और उसकी मुहब्बत उनकी घुट्टी में पड़ी थी और अब वह अरसे इराज़ से हसरत दिल में हुए थे, चुनांचे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको यह खबर दी तो वह मुतवक्के (प्रत्याशित) हो गए कि इस ख़्वाब की ताबीर (स्वप्नफल) इसी साल निकल आऐगी। इस बात ने उनकी आतिशे शौक को और भड़का दिया, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़्वाब नबी होने की बिना पर सच्चा ही होता है। चुनांचे आपने काबे की जियारत व तवाफ का इरादा फरमा लिया और सब सहाबा भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रवाना होने के लिए आमादा हो गए शायद ही कोई बचा हो, जिसने इरादा न किया हो, इरादा सिर्फ उमरे का था,

किसी टकराव का न था, और उमरा वहां हर एक उमरे की नियत से आने वाले के लिए खुला था, इसलिए किसी को भी रोका नहीं जाता था लेकिन सिर्फ मुसलमानों के लिए उसको मुश्किल बना दिया क्योंकि कुरैशी उनसे दुश्मनी रखते थे, आने न देते लेकिन अब मुसलमानों की ताकत ऐसी थी कि रोका नहीं जा सकता था। बहरहाल चूंकि वहां उमरे का ही इरादा था इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों ने उमरे का एहराम शुरु से ही बांध लिया था ताकि लोगों को भी इसका इल्म हो जाये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ ज़ियारत बैतुल्लाह की ग़रज़ से तशरीफ ले जा रहे हैं[1]।

वहां पहुंच कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बील–ए–खुज़ाअः के एक मुख़बिर को कुरैश का पता लगाने के लिए नियुक्त किया, जब आप मक़ाम "असफ़ान" के क़रीब पहुंचे तो उस मुख़बिर ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी कि क़बील–ए–कअ़ब बिन लोई ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबिले और पेश क़दमी रोकने के लिए हबशियों को इकट्ठा कर रखा है ख़ासी बड़ी फ़ौज मुनज़्ज़म (संगठित) कर ली हैं, उनका इरादा है कि जंग करके आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बैतुल्लाह तक पहुंचने से बाज़ रखें, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेश क़दमी जारी रखी, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस घाटी पर पहुंचे जहां से उनकी तरफ़ उतार शुरु होता है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊँटनी "कसवा" बैठ गई लोगों ने यह देख कर कहना शुरु किया क़सवा अड़ गई, क़सवा अड़ गई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़सवा अड़ी नहीं और यह इसका तरीक़ा नहीं, इसको हाथियों के रोकने (आप का इशारा अबरहा के हाथी की तरफ़ था जिसको अल्लाह ने मक्के में दाखिल होने से बाज़ रखा) वाले ने रोका है, और क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, वह लोग कोई भी मनसूबा पेश करते हैं जिसमें अल्लाह तआला की ताज़ीम (सम्मान) का पहलू मद्दे नज़र रखा जाता है और मुझसे सिलारहमी का सवाल करते हैं, तो मैं उनका सवाल ज़रूर पूरा करूँगा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊँटनी को झिड़का वह ख़ड़ी हो गई लेकिन अपना दुख़ बदल कर हुदैबिया की तरफ रवाना हो गई।

❖❖❖

इत्तिहाद .....

बस चाहिए कि जब उसूल में सब मुत्तफ़िक़ हैं तो फुरू (अमौलिक) में अपनी–अपनी तहक़ीक़ पर अमल करते हुए उम्मत को मुत्तहिद करने की कोशिश करें अल्लाह तआ़ला तौफीक़ से नवाज़े।

❖❖❖

1. तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

सबसे पहले उन बातों को मालूम करने की ज़रूरत है, जिन पर एक मुसलमान के लिए आस्था (अक़ीदा) रखना और उनके अनुसार अमल करना ज़रूरी है, और जिनके विश्वास के बिना कोई आदमी मुसलमान कहलाने का हकदार (अधिकारी) नहीं। वह आस्थाएं (अकाइद) जो दुनिया के सभी मुसलमानों के बीच सम्मिलित और भारतीय मुसलमान भी उन पर ऐसा ही विश्वास रखते हैं जैसे मक्का—मदीने का मुसलमान या मग़रिबे अक्सा (मोरक्को—मराकश) या इण्डोनेशिया का मुसलमान, वह आस्थाएं ये हैं।

इस कारख़ान—ए—कुदरत ब्रह्मांड का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है, हमेशा रहेगा। वह तमाम खूबियों, तारीफ की बातों गुणों और पूर्णता का वाहक और हर प्रकार के दोष अवगुण और त्रुटि से पाक है, तमाम मौजूदात और समस्त ज्ञान उसकी जानकारी में है। ये पूरी कायनात उसी के इरादे से है, वह ज़िन्दा है, समीअ़ (सुनने वाला) है बसीर (देखने वाला) है, न कोई उसकी तरह है, न उसका कोई प्रतिद्वन्दी और कोई उसके बराबर का है। वह बेमिसाल है। वह किसी की मदद का मुहताज नहीं। क़ायनात को चलाने और उसका इन्तेज़ाम करने में उसका कोई साक्षी, साथी और सहायक नहीं। इबादत अर्थात (अतिसम्मान) का केवल वही पात्र है। केवल वही है जो रोगी को आरोग्य बनाता, सृष्टि को जीविका देता और उनकी तकलीफों को दूर करता है। अल्लाह के अलावा दूसरों को पूज्य बनाना, उनके सामने अपनी हीनता तथा विवशता का इज़हार (प्रकट करना) उनके सामने माथा टेकना, उनसे दुआ और ऐसी चीज़ों में मदद मांगना जो मानव शक्ति से बाहर और केवल अल्लाह की कुदरत से सम्बन्ध रखती है। उदाहरणतः संतान देना, भाग्य अच्छा—बुरा करना, हर जगह मदद के लिए पहुंच जाना, हर फासले की बात सुन लेना। मन की बातों और छुपी हुई चीज़ों का जान लेना इस्लाम की परिभाषा में शिर्क (अनेकेश्वरवाद) है और वह सबसे बड़ा पाप है जो बिना तौबा के माफ नहीं होता।

पवित्र कुर्आन में कहा गया हे कि "उसकी शान ये है कि जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे कह देता है कि "हो जा" तो वह हो जाती है।

(सूरः यासीन 82)।

अल्लाह किसी के शरीर में उतरता है न किसी का रूप धारण करता है, न उसका कोई अवतार होता है। वह किसी स्थान या दिशा

में सीमित नही है, वह जो चाहता है वही होता है, जो नहीं चाहता वह नहीं होता। वह ग़नी व बेनियाज़ है, किसी चीज़ का भी मुहताज नहीं। उस पर किसी का आदेश नहीं चलता। उससे पूछा नहीं जा सकता कि वह क्या कर रहा है? हिकमत उसकी विशेषता है, उसका हर काम हकीमाना है, और अच्छाई लिए हुए है। उसके अतिरिक्त कोई (वास्तविक) शासक नहीं। भाग्य अच्छा हो या बुरा अल्लाह की ओर से है, वह पेश आने वाली चीज़ों को पेश आने से पहले जानता और उनको अस्तित्व प्रदान करता है।

उसके अति सम्मानित और करीबी फरिश्ते हैं, अल्लाह की सृष्टि मे शैतान भी हैं, जो आदमियों के लिए पाप का कारण बनते हैं, उसकी सृष्टि में से जिन्नात भी हैं।

क़ुर्आन अल्लाह का कलाम है, उसके शब्द व अर्थ सब अल्लाह की ओर से है, वह पूर्ण है, परिवर्तन (कमी–बढ़ोतरी और तब्दीली) से सुरक्षित है। जो आदमी उसके परिवर्तन या कमी व ज़्यादती का कायल हो वह मुसलमान नहीं।

मुर्दों का अपने जिस्मों के साथ मरने के बाद ज़िन्दा होना पूर्ण सत्य है। हिसाब–किताब और बदला व दण्ड सत्य है, जन्नत–दोज़ख सच है।

पैगम्बरों का अल्लाह की ओर से दुनिया में आना सच है और नबियों के द्वारा अल्लाह का अपने बन्दों को आदेश और शिक्षा देना सत्य है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के आखिरी नबी हैं और आपके बाद कोई नबी नहीं। आपकी दअ़वत और ईशदैत्य (रिसालत) सम्पूर्ण जगत के लिए है। इस प्रधानता और विशेषता में तथा इसके अतिरिक्त उस जैसी दूसरी विशेषताओं में वह समस्त सन्देष्टाओं (नबियों) में श्रेष्ठ है। आपको नबी माने बिना ईमान (आस्था) विश्वसनीय नहीं और कोई सत्य धर्म नहीं। इस्लाम ही केवल सत्य धर्म है। इसके अलावा कोई अन्य सत्य धर्म ईश्वर (अल्लाह) के यहाँ स्वीकार और परलोक (आखिरत) में छुटकारा का माध्यम नहीं। शरीअत (इस्लाम) के आदेश बड़े–बड़े से ईशभक्त, संयमी और इबादत करने वाले से भी कभी भी हटाये नहीं जा सकते।

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद इमाम और सच्चे ख़लीफा थे, फिर हज़रत उमर रज़ि0 फिर हज़रत उस्मान रज़ि0, फिर हज़रत अली रज़ि0, सहाबा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी) मुसलमानों के धार्मिक गुरू और रहनुमा हैं, उनको बुरा–भला कहना हराम है और उनका मान–सम्मान अनिवार्य है।

❖❖❖

तीन कुव्वतों की ज़रूरत

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी —अनु0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

ज्ञान, धन और सत्ता

दज्जाल की जन्नत-

लेकिन आज के दौर में ये हमारे सारे कॉलेज दज्जाल की जन्नत बने हुए हैं, उसको मैं कहा करता हूँ दज्जाल की जन्नत। हदीस में आता है कि जब दज्जाल आएगा तो उसके एक हाथ में जन्नत होगी और दूसरे हाथ में जहन्नम। और उसकी जन्नत हक़ीकत में जहन्नम होगी और जो उसकी जहन्नम होगी वह असल में जन्नत होगी तथा जो उसकी जहन्नम में जाएगा वह वास्तव में स्वर्ग का मज़ा पाएगा और जो उसकी जन्नत में जाएगा वह जहन्नम का मज़ा चखेगा। आज भी ऐसा ही है। तो जो इस कल्चर में फंसे हुए हैं जो हक़ीकत में जहन्नम है और जो इस्लामी कल्चर में हैं लोग उनको देखकर तरस खाते हैं कि कितने ग़रीब हैं, उनके पास पैसा कम है, ये देखने में मामूली नज़र आ रहे हैं और जो अपर क्लास के लोग उनके साथ, होटलों में नहीं जाते, फाइव स्टार होटलों में अपना फंक्शन नहीं कर पाते तो लोग उन पर तरस खाते हैं मगर वास्वत में ये लोग उनपर तरस खाते हैं कि तुम ऐश व ठाठ–बाट में नज़र आ रहे हो लेकिन तुम्हारा दिल नारकीय है और हम देखने में थोड़ा परेशान नज़र आते हैं, लेकिन हमारा दिल जन्नत का नमूना है। मगर ये उस समय होगा जब हम लोग सही इस्लाम पर होंगे वर्नाः

"न इधर के रहे न उधर के रहे
न खुदा ही मिला न विसाले सनम"

ये भी हो जाता है मगर जो सही दीन पर है वह बहुत खैर में हैं, थोड़ी परेशानी तो है, लेकिन कोई खास परेशानी नहीं है, तो ऐसे में ज़रूरत इस बात की है कि उनके कॉलेजों से अपने बच्चों को हटा लें और अपने कॉलेज इस्लामी कल्चर के साथ कायम करें, इसमें शर्माने की ज़रूरत नहीं है, बिल्कुल पूरे इन्तेज़ाम के साथ अपने कल्चर को लाएं, इंग्लिश ज़बान में साइंस आ रही है, उसको सही ढंग से पढ़ाकर और उन सभी को मुसलमान बनाकर उनको कल्मा पढ़ा दिया जाए जैसे फलसफा को कल्मा पढ़ा दिया गया और ये लिखा गया है कि हमारे हज़रत मौलाना अब्दुल बारी नदवी रह0 के हाथों फलसफा मुसलमान हो गया। जिस तरह उन्होंने फलसफा को पेश किया। ऐसा लगा कि मानो ये एक इस्लामी फन है। ऐसे ही ये साइंस और ये सब ज्ञान हमारे हैं। उनकी बुनियाद मुसलमानों ने रखी है, लेकिन हम लोग इतने अनाभिज्ञ और जाहिल हो गए कि हमको कुछ मालूम ही नहीं है।

अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0 ने एक प्रसिद्ध पुस्तक "उमर खय्याम" लिखी और उसमें उमर का परिपूर्ण

परिचय दिया कि उमर खय्याम क्या था? जिसके बारे में यूरोप वालों ने बताया कि वह मानो महज़ एक शायर था और उसकी ग़ज़लों का यूरोप की चौदह भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। लेकिन वह वास्तव में साइंस का आदमी था। जब वह साइंस पर काम करते– करते थक जाता था तो लेट जाता और लेटे–लेटे शेर कहता था, तबीयत को ताज़ा करने के लिए, ये तो ज़ाहिर है कि कितना बड़ा आदमी रहा होगा। तबीयत को ताज़ा करने के लिए जो गज़लें लिखी वह चौदह ज़बानों में हैं और जो असल में उसका मैदान था वह साइंस है और जब साइंस के बारे में उसका ज़िक्र करते हैं तो सिर्फ खय्याम कहते हैं। बेचारे मुसलमान जानते ही नहीं कि खय्याम क्या है? और जब ग़ज़लों का ज़िक्र करते हें तो कहते हैं कि उमर खय्याम। ताकि मुसलमान जानें कि वह सारी ज़िन्दगी नाचता और गाता रहा, उसके अलावा कोई काम न था। और जो उसका काम था वह साइंस का था और उस पर लिखा भी जा रहा है, वह सारे उलूम (ज्ञान) हमारे हैं, जो ज्ञान हमारे हैं हम उसको जिस तरह चाहेंगे पढ़ाएंगे, हदीस में आता है "हिक्मत मोमिन की गुमशुदा चीज़ है, जहां मिल जाए तो वह उसका अधिक पात्र है"।

हिक्मत (युक्ति) जो है मोमिन का गुमशुदा माल है, जहां भी है, वह हमारा है खो गया था, हमारे बाप–दादा का इल्म है। यूरोप वालों ने उनको अपने हाथ में लेकर खराब कर दिया और उसको सही करके जैसे हमारे पास था उसको सही कर लेंगे और उसको आगे बढ़ाएंगे, उसको मार्केट में लाएंगे, और ज़ाहिर है कि मार्केट की चीज़ है और मार्केट में बिकेगा। उसको और कैसे मूल्यवान बनाया जाए ये सोचने की ज़रूरत है। जैसे मोती है, उसमें छेद करने से उसकी कीमत बढ़ जाती है। इस तरह ये समस्त शिक्षा और ज्ञान इस्लामी CONCEPT और इस्लामी कल्चर के तहत पढ़ाए जाएं तो उसका फायदा इतना पहुंचेगा कि पूरी दुनिया मालामाल हो जाएगी, लेकिन अफसोस ये है कि इस समय जो मेडिकल साइंस है उसके सरपरस्त यूरोप वाले हैं तो उन्होंने कहा कि मेडिकल साइंस पढ़ने से आपकी दोनों जेबें भर जाती हैं और बैंक बैलेंस बहुत हो जाता है। उन्होंने ये समझा दिया और पढ़ने के लिए खूब खर्च करवाया और आज पढ़कर आए तो उनको लूटना सिखाया कि ग़रीबों को लूटो और उनका खून चूसो। जिस तरह तुम्हारी जेबें हमने काटी हैं और तुम्हारी दौलत हमने लूटी है उसी तरह तुम उनसे लूटो।

लेकिन यदि मुसलमान होते तो उनको बताते कि तुम्हारा बैंक बैलेंस खुदा के यहां बहुत हो जाएगा, इसलिए कि मानव सेवा बहुत बड़ा काम और मानवता को लाभ पहुंचाने वाला है, और अल्लाह उसको तुम्हारी बरकत का ज़रिया बना देगा, और जो तुमने सही पैसा लिया है उससे तुम्हारी ज़िन्दगी अच्छी हो जाएगी और न जाने कितनों की ज़िन्दगी अच्छी

हो जाएगी। तो ऐसे ही समस्त ज्ञान चमक उठेंगे और वह मानव सेवा में लग जाएंगे तथा समस्त मानवता को राहत पहुंचाएंगे। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि जो अल्लाह ने हमें कुव्वत दी है, चाहे ज्ञान की शक्ति हो चाहे माल की, उन दोनों को लगाकर आप पूरी इन्सानियत की खिदमत के लिए तैयार करें। समझें कि अल्लाह ने हमको अमानतदार बनाया है जिसको अल्लाह ने माल दिया वह माल लगाए। यदि दोनों मिल जाएं तो न जाने कितने अच्छे परिणाम निकल कर सामने आए। और इसके लिए न जाने कितनी कोशिशें सामने आ रही हैं। भोपाल में भी मैं चाहता हूँ कि इसी स्तर पर काम होता कि वह लोग जो पैसे की वजह से अपने को फर्स्ट क्लास कहते हैं, वह भी जन्नत के रास्ते पर पड़ें, वर्ना कई बार अफसोस होता है कि ग़रीबों के बच्चे न चाहते हुए भी मजबूरन जन्नत के रास्ते पर है। ये क्या मामला है? इतनी खतरनाक बात है कि आदमी सोचे तो हिल जाए। इसी कारण मैंने कहा कि ये बच्चे खुद भी मदरसों में जाकर पढ़ना नहीं चाहते हैं, जबरदस्ती खींच–खांच कर कि उनके अब्बा के पास पैसा नहीं है तो उनको मदरसे में डाल दो, मजबूरन उनको जन्नत के रास्ते पर डाल दिया गया और जिनके पास बहुत पैसा है उनके बच्चे जानबूझ कर जहन्नम वाले रास्ते पर हैं।

अभी एक यूनिवर्सिटी जाना हुआ तो कुछ प्रोफेसर लोग बैठे थे। हाथरस की बात हो रही थी कि वहां बड़े लोग धर्म विमुख (मुरतद) हो रहे हैं, वहां पर दीन का काम होना चाहिए। मैंने कहा कि उन बेचारे गरीब लोग की आपको बड़ी चिन्ता है और कितने प्रोफेसर यहां मुरतद और जहन्नम के रास्ते पर हैं उनकी किसी को फिक्र नहीं, उनकी भी चिन्ता होनी चाहिए। जो धर्म विमुख (मुरतद) है मुल्हिद (धर्मभ्रष्ट) हैं और जहन्नम के रास्ते पर हैं उनकी फिक्र नहीं है। इसलिए कि उनके पास बहुत पैसा है और बहुत शानदार कोठियों में रहते हैं और बड़े–बड़े होटलों में फंक्शन करते हैं। सिर्फ इसी से वह जहन्नम के रास्ते पर न पहुंच जाएंगे। ये तो फिरऔनी बात हुई जिस तरह फिरऔन ने कहा था "हाज़िहिल अन्हारू तज्रीमिन तह्‌ती अफला तुब्सिरून"। जब हज़रत मूसा अ0 ने फिरऔन से कहा, क्या तुमने लोगों को गलत रास्ते पर बहका के डाल रखा है? तो फिरऔन ने यही कहा था कि ये कोठियाँ, ये महल, ये बगीचे, ये नहरें होने के बावजूद भी तुम मुझे ऐसा इल्ज़ाम देते हो? ये सब कुछ मेरे पास तो है और ये सब इस बात का प्रतीक है कि मैं जन्नत में सबसे ऊँचे स्थान पर रहूंगा। ये धोखा है बहुत बड़ा, और ये फिरऔनी सोच है। ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने आपको इस बात के लिए तैयार करें और एकजुट हो कर ये काम करें, तो न जाने कितने बच्चे जन्नत के रास्ते पर आजाएंगे और अल्लाह हमको कामयाब करेगा। अल्लाह हम सबको सही समझ दे और इस पर अमल करने का सामर्थ तौफीक़) दे आमीन! ❑❑

यादों के झरोखे से

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

बात तीस जनवरी 2013 ई0 की है। उन दिनों मैं बरकतुल्लाह यूनिवर्सिटी भोपाल में बी0एड0 में प्रवेश लेने हेतु मौजूद था। ठीक ग्यारह बज कर चार मिनट पर परममित्र अदील अख़्तर बनारसी का फोन आया कि "मौलाना का इन्तक़ाल हो गया"। फोन की घंटी बजते ही दिल में एक खटका उठा कि कहीं कोई अफसोसनाक खबर न मिले। क्योंकि मौलाना अब्दुल्लाह साहब की सख़्त बीमारी की खबर लगातार मिल रही थी। और मेरी ये आशंका हक़ीकत में बदली तो ऐसा लगा कि मानो कायनात का एक सितारा टूटा और चहूंओर अंधेरा छा गया।

अल्लाह का कानून है कि जो भी आया है उसको जाना है। जो भी चीज़ बनी है उसको फना होना है। बाक़ी रहने वाली ज़ात सिर्फ अल्लाह की है।

मेरी हज़रत मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी साहब रह0 से सबसे पहली मुलाक़ात करीबी दोस्त मुहम्मद जुबैर नदवी ने कराई थी और उसी वक्त मौलाना ने मुझे अपने यहाँ आते रहने को कहा। लेकिन उस समय अपनी एहसासे कमतरी और मौलाना के रौब ने बहुत कम उनकी मजलिस में जाने का मौक़ा दिया। हाँ! ये ज़रूर था कि आलमियत के दौरान बुखारी मौलाना ही पढ़ाते थे इसलिए ये उनकी संगत में बैठने का अच्छा मौक़ा इस गुनहगार को मिला।

मेरी कम मुलाक़ात पर एक दिन मौलाना ने पूछ लिया कि तुम मुझसे मिलने क्यों नही आते हो? मेरे मुंह से अनायास निकला कि "मौलाना आपसे डर लगता है"। मौलाना ने हंसकर कहा, अरे! मैं जानवर थोड़े ही हूँ, जो खा जाऊँगा। इस पर बगल में बैठे एक साहब ने ये कहतेहुए मेरी लाज बचाई कि "नहीं मौलाना! ऐसा नहीं है, इनका ये डर अदबन व एहतेरामन है, और मदारिस के तलबा आमतौर से इसी डर की वजह से किसी बड़ी शाख़्सियत से मिलने से डरते हैं। मौलाना ने भी उनकी बात की मुस्कुरा कर ताईद की।

आलमियत से फ़राग़त के बाद मौलाना ने मुझे अपने नये–नवेले ट्रस्ट अल–आफिया में रिसर्च स्कॉलर के तौर पर बैठने और काम करने का सुअवसर दिया। उन्हीं के कहने पर मैंने "इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?" नामक एक पुस्तक संकलित की।

मौलाना की प्रसंशा में कुछ कहना मेरे जैसे के लिए सूरज को चिराग़ दिखाना है। मौलाना की हस्ती स्वयं एक सूरज की तरह थी जिसने कुफ़्र के अन्धेरे में ऐसी रौशनी फैलाई कि मुद्दतों से दृष्टि हीनता का जीवन बिताने वालों की आँखें चुंधिया गईं और उन्हें अल्लाह के ज़रिए रौशनी नसीब हुई।

शेष पृष्ठ..... 38 पर

इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

महिलाओं का पुरूषों जैसे कपड़े पहनना

प्रश्नः इस्लाम औरतों को मर्दों जैसे कपड़े पहनने से क्यों मना करता है?

उत्तरः पवित्र हदीस में है "हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन पुरुषों पर धिक्कार (लानत) की है जो महिलाओं का वस्त्र धारण करते हैं और उन महिलाओं को धिक्कारा है जो पुरुषों का वस्त्र पहनती हैं। (अबूदाऊद)

इस सम्बन्ध में नवीन मनोवैज्ञानिकों ने शोध से ये निष्कर्ष निकाला है कि विपरीत लिंग का वस्त्र धारण करने से उसमें वही आचार–व्यवहार उत्पन्न होते हैं जो विपरीत लिंग में पाये जाते हैं। अर्थात यदि पुरुष महिलाओं वाला वस्त्र पहनता है तो महिलाओं जैसी आदतें और प्रवृति उसमें जन्म लेती हैं और यदि पुरुषों वाला वस्त्र महिलाएं धारण करें तो उनमें भी पुरुषों जैसी प्रवृति और आदतें पैदा होती हैं। इस बुराई के कारण आज हर चीज़ उल्टी–पुल्टी हो गई है और सामाजिक ढांचा चरमरा गया है तथा नैतिकता का ह्रास चरम पर है।

जो वस्तु जिसके लिए बनी है उसका उपयोग वही करे उसमें ही सभी की भलाई है। अब महिलाएं यदि जीन्स–टी शर्ट पहन लें तो वह पुरुष नहीं हो जाएंगी। महिलाओं को पुरुषों के कपड़े न पहनने की मनाही इस्लाम में इसलिए भी है कि इससे बेपर्दगी होती है और बेपर्दगी से स्त्री के सम्मान पर आँच आती है।

तंग लिबास (TIGHT DRESS):–

किसी शायर ने क्या ख़ूब कहा है:–

"औरतों ने बाल कटवाये मर्दों ने बाल बढ़वाये,
आजकल की है ऐसी सिलाई
ली अंगड़ाई टांके टूट गये"

इस्लाम शर्म व हया का मज़हब है। उसने लोगों को ऐसे वस्त्र धारण करने का आदेश दिया है जिसमें बेशर्मी न झलकती हो। यदि टाइट कपड़े पहने जाएंगे तो इससे बेशर्मी झलकेगी और अनेक बीमारियों को निमंत्रण मिलेगा।

टाइट ड्रेस से हानियाँ–

चुस्त कपड़े से LOCAL MUSCLES बहुत कमज़ोर हो जाते हैं, क्योंकि बाहर में जैसा स्पंदन होता है वैसे ही भीतरी बारीक–बारीक माँसपेशियाँ (MUSCLES) में हरकत होती है। जेसे सूई यदि जिल्द के अन्दर चली जाए तो वह उन सूक्ष्म माँसपेशियों (MUSCLES) के स्पंदन के कारण कहाँ से कहाँ चली जाती है।

अतः जब चुस्त कपड़ा पहना जाता है तो उन छोटी–छोटी माँसपेशियों (MUSCLES) को बहुत नुकसान पहुँचता है ओर उसके स्पंदन में कमी आ जाती है, जिससे मानसिक तनाव और उससे सम्बन्धित

शेष पृष्ठ..... 32 पर

पैकरे-अख़्लाक़ हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

(वफ़ात के मौक़े पर)

—डॉ0 देवनाथ चतुर्वेदी

आज से लगभग 10 साल पहले की बात है। श्री तेज नारायण सिंह, संस्थापक, शक्तिपीठ महाविद्यालय, दौलतपुर, बलिया के साथ एक ज़रूरी काम से मुझे लखनऊ जाना पड़ा। लखनऊ पहुँच कर जब हमने अपना काम पूरा कर लिया तो हमें 'नदवतुल उलमा' लखनऊ के कुछ पुराने मिलने वालों की याद आने लगी। मैंने श्री तेज नरायण सिंह से कहा– "अगर मौक़ा हो तो मेरे साथ चलिए, मैं आज आपको लखनऊ की एक नई दुनिया दिखा लाऊँ।" यह सुन कर श्री सिंह ने एक अजीब अन्दाज़ में कहा, "गुरु जी! लखनऊ में नई दुनिया भी कहीं है? उसे तो मैं नहीं जानता हूँ। मुझे उस नई दुनिया को जरूर दिखाइये।" ख़ैर हम दोनों लखनऊ की नई दुनिया देखने की ग़रज़ से चल पड़े।

हम लोग दारुल उलूम (नदवा) के गेट पर पहुंचे और अन्दर, जाना चाहा, तो गेट पर तैनात दरबान ने हमें अन्दर जाने से रोका और अन्दर जाने का मक़सद जानना चाहा। मैंने कहा "मुझे दारुल उलूम (नदवा) के मोहतमिम हज़रत मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी साहब से मिलना है। उनके अलावा और भी कई लोग हैं, जिनसे मिलना है।" दरबान ने फाटक खोल दिया। हम लोग अन्दर दाख़िल हो गए।

मोहतमिम साहब से मिलने के ख़्याल से मैं आपके दफ़्तर गया दफ़्तर के सामने दरवाज़े पर बैठे हुए ख़ादिम से कहा "अगर तुम्हारे साहब अन्दर हों तो कह दो बलिया से पंडित देवनाथ चतुर्वेदी, आपसे मिलने आये हैं।" मेरा नाम सुनते ही हज़रत ने मुझे अन्दर बुलाया और ख़ुलूस व मुहब्बत के साथ मुझे बैठाया और कहा "पंडित जी! एक ज़माने के बाद आज आपके दर्शन हो रहे हैं, लगभग 10 साल बाद हमारी आपकी मुलाक़ात हो रही है।" मैं अपनी मजबूरी का इज़्हार कर ही रहा था कि आपकी पसन्दीदा मदीने के पुदीने की चाय की प्याली हमारे सामने आ गई। कुछ देर तक सुख–दुख की बातें हुईं फिर वहां से रुख़्सत हुए। ज्योंही दफ़्तर से बाहर निकले दारुल उलूम नदवा के एक होनहार तालिबे इल्म जुबैर अहमद से अचानक हमारी मुलाक़ात हो गई। उस बच्चे ने सामने आकर बड़े अदब के साथ सलाम किया और पूछा "दादा! आपका यहां कैसे आना हुआ?" मैं उस बच्चे को पहचान न सका। उसने अपना तअरुफ़ कराते हुए कहा "दादा! मैं आपको पहचान रहा हूँ। मैं भी आपके गाँव, परमन्दापुर बलिया का ही रहने वाला हूँ। इसी दारुल उलूम में पढ़ता हूँ।" उस बच्चे का अख़्लाक़ मुझे बहुत पसन्द आया और उसी के साथ हम दारुल उलूम (नदवा)

की एक मुमताज़ और बुज़ुर्ग शख़्सियत हज़रत राबे हसनी नदवी की ज़ियारत के ख़्याल से आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए।

हमारे आने की ख़बर मिलते ही हज़रत मौसूफ़ मेहमान ख़ाने में तशरीफ फ़र्मा हुए। बात–चीत के दौरान आपने पूछा "आप लखनऊ कब आए?" मैंने कहा हज़रत! कल सुबह के वक्त आये, फिर आपने पूछा, "रात में क़याम कहाँ रहा?" मैंने कहा दारुलशिफ़ा में रात गुज़ारी गई।" मुहब्बत भरे लहज़े में आपने फ़रमाया "आप नदवा ही क्यों नहीं चले आए। वहां रुकने की कौनसी बात थी। वहां आप लोगों को बहुत तक़्लीफ हुई होगी। अब जब भी लखनऊ आना हो बिला तक़ल्लुफ़ नदवा चले आयें। आप लोगों के ठहरने का यहाँ सारा इन्तिज़ाम हो जाएगा।" मैं यह बात कारईन को बता देना चाहता हूँ कि हज़रत मौसूफ़ से यह हमारी पहली मुलाक़ात थी। आपके ख़ुलूस व मुहब्बत से मैं कितना असर पज़ीर हुआ, बयान करने के लिए फिलहाल मेरे पास अल्फ़ाज़ नहीं हैं। इस मुलाक़ात के असरात मेरे दिल पर नक़्श हैं।

इसके बाद हम मौलाना ख़ालिद गाज़ीपुरी नदवी के दफ़्तर में आये। वहां से निकलने के बाद हुस्ने इत्तेफ़ाक़ से हम 'पयाम–ए–इन्सानियत फ़ोरम' के दफ़्तर में गए, जहां हमें हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी, नदवी साहब से मिलने का मौक़ा मिला। आपसे यह हमारी पहली मुलाक़ात थी। ज़ुबैर अहमद ने हमारा तआरुफ कराया। आपकी इस मुख़्तसर सी मुलाक़ात से हमें ऐसा लगा, जैसे सदियों से शानासाई है। आपने हमें, 'पयाम–ए–इन्सानियत फ़ोरम" के मक़ासिद के बारे में बहुत कुछ बताया। 'पयाम–ए–इन्सानियत फ़ोरम' जिसकी बुनियाद, हज़रत अली मियाँ नदवी के ज़माने में डाली गई थी उसका मक़सद ही था, लोगों में राष्ट्र प्रेम, आपस में भाई चारगी पैदा करना, छोटे–बड़े, अमीर–ग़रीब के भेद–भाव से दूर रह कर, ख़िदमते ख़ल्क़ में अपने आपको लगा देना और दूसरों के दिलों में भी ऐसा ही ख़्याल पैदा करना। हज़रत अब्दुल्लाह हसनी नदवी को ये सारी बातें हज़रत अली मियाँ नदवी से विरासत में मिली थीं, ऐसा मुझे उनकी बात–चीत से लगा। वहाँ से रुख़्सत होते वक्त हिन्दी और उर्दू ज़बान में बहुत सी किताबें पेश कीं।

इस तरह एक ही जगह और एक ही साथ इतनी अज़ीम शख़्सियतों से मुलाक़ात बाइसे फ़ख्र कही जायेगी। जब हम लोग नदवा से रुख़्सत होने लगे तो श्री तेज नारायण सिंह ने एक अजीब अन्दाज़ में कहा "गुरुजी! दर हकीक़त आपने आज हमें लखनऊ की एक नई दुनिया का दर्शन करा दिया। लखनऊ मैं आपके साथ न आता, तो शायद इस नई दुनिया का दर्शन सम्भव न होता। यहां का सुन्दर एवं शान्त वातावरण, यहां के लोगों की मुहब्बत और यहां के बच्चों का अनुशासन मेरे

मन को अनायास ही आकर्षित कर रहा है। इसी तरह की चर्चा करते हुए हम लोग अपने आवास पर आये और शाम की ट्रेन से बलिया, वापस चले आये।

मैं अपनी खुद नविश्त "कभी सोचा न था हमने" का मसविदा लेकर लखनऊ गया। इसबार मैं बिलातकल्लुफ़ दारुल उलूम (नदवा) चला गया। मेहमान ख़ाने में मेरे ठहरने का मुकम्मल इन्तिज़ाम हो गया। दूसरे दिन दोपहर की नमाज़ केबाद मेहमान ख़ाने में हज़रत राबे हसनी नदवी, हज़रत मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी, हज़रत अब्दुल्लाह हसनी नदवी, मौलाना ख़ालिद गाज़ी पुरी नदवी वगैरह तशरीफ़ फर्मा थे, मैं भी वहां बैठा हुआ था, चाय का दौर चल रहा था। उसी मौक़े पर अचानक मेरे दिल में एक ख़्याल आया। मैंने हज़रत मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी साहब से अपनी खुद नविश्त "कभी सोचा न था हमने" के मुतअल्लिक़ बतौर तअस्सुर कुछ लिखने का ख़्याल ज़ाहिर किया। आपने अपना पैड मंगा कर वहीं लिखकर हमें दे दिया जो मेरी तस्नीफ़ में शामिल हो कर आज उसकी ज़ीनत बन गया है। यह इस बात की पुख़्ता दलील है कि आपके दिल में मेरे लिए कितनी मुहब्बत और खुलूस है। उसी मौके पर जनाब मास्टर अतहर साहब से मेरी मुलाक़ात हो गई। उर्दू ज़बान के प्रति रुझान देख कर आपने हज़रत सय्यद सुलैमान नदवी की मशहूर व मारूफ़ किताब "ख़ुत्बात–ए–मद्रास" का हिन्दी ज़ुबान में तर्जुमा करने की फरमाइश की। मैंने अपना दामन बचाने की हर चन्द कोशिश की मगर बचा न सका। यह कहते हुए उस किताब को अपने पास रख लिया कि कोशिश करूँगा। हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी ने इस मुश्किल काम को आसानी से करने के लिए मेरा हौसला बढ़ाया और इस काम को पाये तक़्मील तक पहुँचाने के लिए हर मुमकिन इम्दाद का वादा किया। इसके लिए आज मैं हज़रत का तहे दिल से शुक्र गुज़ार हूँ कि आप की हौसला अफ़ज़ाई की बदौलत ही मैं इस काम को पूरा कर सका। यह सच है कि "वही होता है जो मंजूरे ख़ुदा होता है"। मैं अपनी खुद नविश्त को फख़रुद्दीन अली अहमद के दफ़्तर में जमा करके बलिया वापस चला आया।

बलिया आने के बाद अपने वादे के मुताबिक़ "ख़ुत्बात–ए–मद्रास" नामी किताब के हिन्दी तर्जुमे का काम शुरु कर दिया। इस किताब में कुल आठ ख़ुत्बे हैं। पूरी किताब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी पर लिखी गई है। इसलिए इसके तर्जुमे में भी बहुत सावधानी की ज़रूरत महसूस हुई। इस बात का मुझे हमेशा ख़्याल रखना पड़ता था कि कहीं कोई भूल–चूक न हो जाये। कहीं किसी तरह की कोई बे अदबी न हो जाये। इस काम में मुझे लगभग आठ महीने का वक़्त लगा था।

जब "खुत्बात–ए–मद्रास" का हिन्दी तर्जुमा हो गया तो उसका नाम "अनुपम आदर्श" रखा गया। "अनुपम आदर्श" को ले कर मैं लखनऊ गया। सबसे पहले उसको मैंने जनाब मास्टर अतहर साहब को दिखाया। बड़ी लगन के साथ आपने उसको देखा और सराहा, फिर उसे लेकर हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी साहब को दिखाया। आप "अनुपम आदर्श" के मसव्वदे को देखकर बहुत खुश हुए और मुझे सीने से लगाते हुए न जाने कितनी दुआओं से नवाज़ा। उसे मंज़रे आम पर लाने का वादा भी किया। मेरी नज़रों के सामने आज भी व मंज़र रक़्स करता हुआ वैसे ही दिखाई दे रहा है। उस तर्जुमे को आपके सुपुर्द करके मैं बलिया चला आया।

लगभग तीन महीने के बाद अचानक एक दिन दारुल उलूम लखनऊ से जुबैर अहमद का टेलीफोन आया "दादा! बड़ी खुशी की बात है। आपका तर्जुमा "अनुपम आदर्श" मंज़रे आम पर आ गया है। इसकी तबाअत सत्य मार्ग प्रकाशन, हिन्दी अकादमी, 504/45/2डी टैगोर मार्ग, डाली गंज, लखनऊ द्वारा हुई है। इस कामयाबी के लिए मुबारकबाद है! आपकी किताब बहुत खूबसूरत अन्दाज़ में छपी है। हर देखने वाले को पसन्द आ रही है। इसकी रस्मे इज़रा भी बहुत जल्द होने वाली है। उस मौक़े पर जरूर आइयगा। यहाँ से ख़बर भेजी जाएगी। यह जानकर कि मेरी मेहनत अवाम को पसन्द आ रही है, मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। इस काम को पाये तक्मील तक पहुँचाने में जुबैर अहमद की कोशिश भी क़ाबिले तारीफ़ है। उन्हीं की देख– रेख में यह काम अंजाम पा सका। इसके लिए मैं उनके मुस्तक़बिल में कामयाबी के लिए तहेदिल से दुआ गो हूँ।

इस किताब का मंज़रे आम पर आना हक़ीक़तन हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी की मुहब्बत का समरा कहा जायेगा। अब मैं आपके इतना क़रीब आ गया कि आप हमेशा मोबाइल से मेरी खैर–ख़बर लिया करते थे। जब भी मैं अपने मोबाइल से राब्ता क़ायम करता दुआओं से भरा हुआ फौरन आपका जवाब मिलता।

नदवे के क़याम के दौरान मैं शाम के वक्त अक़्सर आपके दौलत कदे पर जाया करता था। वहां अस्र और मग़रिब के दरमियान रोज़ एक रूहानी नशिस्त होती थी जिसमें काफ़ी तादाद में लोग शरीक़ हो कर मुस्तफीज़ होते थे। मुझे भी उसमें शिर्कत करने का मौक़ा नसीब होता था। उस नशिस्त में शिर्क़त करने से रूहानी सुकून मिला था।

31 जनवरी 2013 को दोपहर के वक्त नदवा, लखनऊ से अकस्मात हमें ख़ाबर मिली कि हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी अल्लाह के प्यारे हो गए– "इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"

हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी की शख़्सियात में एक अजीब तरह की कशिश थी, जो आम तौर पर लोगों को अपनी तरफ खींच लेती थी।

शेष पृष्ठ..... 37 पर

दिन-रात और ऋतुएँ

—डॉ0 इसपाक अली

दिन-रात कैसे बनते है?- हमारी पृथ्वी एक ऐसा खगोलीय गोला है, जिसमें अपना प्रकाश नहीं है। इस गोले का जो आधा भाग सूर्य के सामने होता है, उस पर सूर्य का प्रकाश पड़ रहा होता है। शेष आधा भाग, जो पिछली ओर को है, प्रकाशहीन होता है। प्रकाशित भाग में उस समय दिन होता है और प्रकाशहीन भाग में रात होती है।

दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन- पृथ्वी लट्टू की भांति अपने अक्ष या धुरी पर घूमती है। इसे हम पृथ्वी का परिभ्रमण कहते हैं। पृथ्वी को एक बार परिभ्रमण करने में 24 घण्टे का समय लगता है। इसमें लगभग आधा समय तो पृथ्वी के धरातल पर का कोई भी भाग सूर्य के सामने से गुजरता है तो शेष आधा समय पिछली ओर को होकर, अर्थात अंधेरे में से। इस प्रकार परिभ्रमण के एक चक्र में लगभग आधे समय के लिए दिन होता है और आधे समय के लिए रात। तब दूसरा चक्र आरम्भ हो जाता है और इस प्रकार रात के पश्चात दिन और दिन के पश्चात रात होती रहती है। 24 घण्टे के हर एक दिन–रात को साधारण बोल–चाल में हम एक दिन कहते हैं।

दिन-रात छोटे-बड़े क्यों होते हैं?- यदि पृथ्वी का अक्ष पृथ्वी के कक्ष पर लम्बवत होता, जो जैसे आकृति से स्पष्ट है, पृथ्वी पर के प्रत्येक स्थान पर दिन–रात बराबर होते, परन्तु ऐसा नहीं है। पृथ्वी का अक्ष कक्ष के साथ $66\frac{1}{2}^0$ का कोण बनाये रहता है और वार्षिक परिक्रमण में यह झुकाव इस प्रकार रहता है– 21 जून को उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर से सबसे अधिक झुका होता है, और 23 दिसम्बर को दक्षिणी ध्रुव सूर्य की ओर सबसे अधिक झुका रहता है। 21 मार्च को और 23 सितम्बर को उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों का सूर्य के प्रति झुकाव एक समान होता है। इसका परिणाम यह होता है कि जून में उत्तरी गोलार्ध में दिन बड़े ओर रातें छोटी होती हैं और दक्षिणी गोलार्ध में दिन छोटे और रातें बड़ी। दिसम्बर में इसके ठीक विपरीत होता है, अर्थात उत्तरी गोलार्ध में दिन छोटे और रातें बड़ी तथा दक्षिणी गोलार्ध में दिन बड़े और रातें छोटी हैं।

मार्च और सितम्बर में पृथ्वी के सभी भागों में दिन–रात बराबर लम्बाई के (12–12 घण्टे) होते हैं। ध्रुवों पर छः मास का दिन और छः मास की रात होती है। उत्तरी ध्रुव 21 मार्च से 23

सितम्बर तक लगातार सूर्य के सामने रहता है और दक्षिणी ध्रुव 23 सितम्बर से 21 मार्च तक। विषुवत वृत्त पर दिन–रात सारा साल समान होत हैं और मौसम भी वर्ष भर एक जैसा रहता है।

ऋतुएँ- पृथ्वी एक वर्ष में सूर्य का एक बार परिक्रमण करती है। इस परिक्रमण में अक्ष का झुकाव सदा अपने समान्तर रहता है 21 मार्च को सूर्य विषुवत वृत्त पर लम्बवत चमकता है, 21 जून को 23.5^0 उत्तर में ''कर्क वृत्त'' पर सीधा चमकता है, 23 सितम्बर को विषुवत वृत्त पर सूर्य की किरणें लम्बवत पड़ती हैं और 23 दिसम्बर को 23.5^0 दक्षिण में मकर वृत्त पर इसका परिणाम यह होता है कि उत्तरी गोलार्ध में मार्च में वसन्त ऋतु होती है, जून में ग्रीष्म ऋतु, सितम्बर में शरद ऋतु और और दिसम्बर में शीत ऋतु होती हैं। दक्षिणी गोलार्ध में ऋतुएं इसके विपरीत होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में दिन लम्बे होते है, रातें छोटी, शीत ऋतु में दिन छोटे होते हैं और रातें लम्बी होती हैं। वसन्त और शरद ऋतुओं में दिन–रात बराबर होते हैं और मौसम सुहावना होता है।

दोपहर को सूर्य की किरणें लम्बवत पड़ती हैं परन्तु प्रातः और सायं ये किरणें तिरछी होती हैं। यही कारण है कि दोपहर को हमारी छाया छोटी होती है परन्तु सवेरे और सायं के समय बड़ी होती हें। इसी प्रकार ग्रीष्म ऋतु में सूर्य दोपहर के समय शीत ऋतु की अपेक्षा अधिक लम्बवत होता है, अतः ग्रीष्म ऋतु में साये छोटे होते हैं और शीत ऋतु में लम्बे होते हैं।

एक और बात ध्यान देने योग्य है कि सूर्योदय के समय गर्मी हल्की होती है, ज्यों–ज्यों सूर्य आकाश में ऊपर उठता है, गर्मी बढ़ती जाती है। दोपहर के समय सूर्य सबसे अधिक ऊँचाई पर आ चुकता है और फिर ठलने लगता है। परन्तु गर्मी अभी घण्टा दो घण्टा बढ़ती ही जाती है कारण है कि सवेरे से दोपहर तक धूप के पश्चात भी सूर्य अभी घण्टा दो घण्टे लगभग सीधा ही चमक रहा होता है जिससे पर्याप्त मात्रा में और अधिक गर्मी एकत्रित होती रहती है और गर्मी को और तेज कर देती है। फिर सूर्य अधिक ढल जाता है तो धूप में बहुत कम गर्मी रह जाती है। और भूमि में एकत्रित गर्मी भी विकीर्ण तथा हवा लगने के कारण बहुत कम रह जाती है। इससे सायंकाल को ठण्ड हो जाती है। रात को भी आधी रात के पश्चात आधी आधी रात की अपेक्षा अधिक सर्दी हो जाती है। ठीक इसी प्रकार ऋतुओं के विषय में होता है। हमारे यहाँ जून में सबसे अधिक गर्मी न हो कर जुलाई का मास सबसे गर्म होता है और शीतकाल में दिसम्बर की अपेक्षा जनवरी में सर्दी अधिक पड़ती है। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः मग़रिब की अज़ान के कितनी देर बाद जमाअत होनी चाहिए कुछ लोगों का कहना है कि अज़ान के फौरन बाद जमाअत होनी चाहिए कुछ लोग कहते हैं कि दूसरी फर्ज़ नमाज़ों की तरह मग़रिब में भी अजान के बाद कुछ रुक कर जमाअत होनी चाहिए?

उत्तरः वक़्त में गुंजाइश के लिहाज़ से जहां जो मामूल हो उसी पर अमल होना चाहिए, मग़रिब का वक्त सूरज डूबने के बाद से लगभग सवा घण्टे से कुछ ज़्यादा तक रहता है, बस अगर किसी मस्जिद में अज़ान के फ़ौरन बाद जमाअत होती है तो नमाज़ी उस की पाबन्दी करें और पहले से तैयारी करके जमाअत से नमाज़ अदा करें, जहाँ कुछ देर से जमाअत होती है नमाज़ी वहां उसी की पाबन्दी करें। हमारे मुल्क में अक्सर अहनाफ हैं उनके नजदीक अज़ान के बाद जल्द जमाअत होना अफ़ज़ल है इसलिए यहां कि अक्सर मस्जिदों में अज़ान के फौरन बाद इक़ामत और जमाअत का मामूल है। आम तौर से दो मिनट से ज़्यादा का फास्ला नही होता, सऊदिया में मामूल है मगरिब की अज़ान के पाँच दस मिनट बाद जमाअत होती है, रिवायत में मिलता है कि सहाब–ए–किराम आमतौर पर मग़रिब की अज़ान के बाद दो रकअत नफ़्ल पढ़ लिया करते थे फिर जमाअत होती थी, इसलिए जो सऊदिया रह कर आए हैं वह मुतालबा करने लगते हैं कि मगरिब की अज़ान के पाँच दस मिनट बाद जमाअत होना चाहिए, उनको चाहिए कि इसमें इख़्तिलाफ न पैदा करें मस्जिद के मामूल की पाबन्दी करें, अज़ान के फौरन बाद नमाज़ पढ़ी जाए या कुछ रुक कर दोनों हालतों में जब सब के नज़दीक नमाज़ हो जाती है तो इख़्तिलाफ करना ठीक नहीं, अगर सब नमाज़ी मुत्तफिक़ हो कर अज़ान के पाँच दस मिनट बाद मग़रिब की जमाअत करते हैं तो अहनाफ को भी कोई एतिराज़ न होना चाहिए। आख़िर रमज़ान में इफ़्तारी के सबब ताख़ीर हो ही जाती है। अगर गैर रमज़ान में ताख़ीर पर इत्तिफ़ाक़ हो जाए तो कोई हरज नहीं बाहम मेल जोल को ज़रूरी समझें।

प्रश्नः हमारे यहां मामूल है कि अस्र और फ़ज्र की जमाअत के बाद नमाज़ी कुछ अजकार पढ़ते हैं फिर दुआ मांगते हैं मगर जुह्र, मग़रिब और इशा की जमाअतों के बाद फौरन दुआ मांगते हैं और सुन्नतें पढ़ने लगते हैं, कुछ लोगों का कहना है कि सभी नमाज़ों के बाद मस्नून अज़कार पढ़ने चाहिए इस सिलसिले में क्या करना चाहिए?

उत्तरः हदीस की किताबों में फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद मुख़तलिफ अज़कार का जिक्र है जैसे

तीन बार अस्तग़फिरुल्लाह की रिवायत अलग है, अल्लाहुअक्बर की भी रिवायत है, अल्लाहुम्मा अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलाम तबारक्त या जल जलालि वल इकराम। इतना तो तकरीबन सभी लोग पढ़ते हैं और हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ते हैं।

दूसरी सही रिवायत से 33 बार सुब्हानल्लाह 33 बार अलहम्दुलिल्लाह और 34 बार अल्लाहुअक्बर पढ़ना भी साबित है, बाज़ रिवायत से फर्ज़ नमाज़ों के बाद आयतुल कुर्सी, सूरह काफिरून, सूर–ए– इख़लास, और कुल अऊजु बिरब्बिल फलक और कुल अऊजु बिरब्बिन्नास सूरतें पढ़ने का भी ज़िक्र है, बाज़ रिवायत में लाइलाह इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुलहम्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर 10 बार पढ़ने का ज़िक्र है। और भी अज़कार और दुआओं का ज़िक्र मिलता है, अहनाफ़ के नज़दीक फर्ज़ नमाज़ों के बाद इन सब के पढ़ने मे बड़ा सवाब है, सब न पढ़ सकें तो कम से कम तस्बीह, फ़ातिमा (33 बार सुबहानल्लाह 33 बार अलहम्दुलिल्लाह और 34 बार अल्लाहुअक्बर) पढ़ने का मामूल बनाएं, लेकिन यह सभी अज़कार पढ़ना सुन्नते गैर मुअक्किदा या मुस्तहब का दर्जा रखते हैं, इनके छूट जाने में कोई गुनाह नहीं, इसलिए अहनाफ के यहां मामूल है कि जिन फ़र्ज़ों के बाद सुन्नते मुअक्किदा नमाज़ें हैं उनमें सुन्नते मुअक्किदा को पहले पढ़े और अज़कार को मुख्तसर करें, लिहाज़ा अहनाफ आमतौर से जुह्र, मग़रिब और इशा के फर्जों के बाद मुख़तसर अज़कार इस्तिख़्फार व तक्बीर और अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम ..... पढ़ कर दुआ करके सुन्नते मुअक्किदा अदा करते हैं और मज़कूरा अज़कार बाद में पढ़ते हैं और यह सही है कि अक्सर लोग बाद में भी नहीं पढ़ते, ऐसे लोग अपने को बड़े सवाब से महरूम करते हैं मगर गुनहगार नहीं होते। अलबत्ता फ़ज्र और अस्र के बाद चुंकि कोई नमाज़ नहीं इसलिए उन दोनों वक्तों के फ़र्ज़ों के बाद सारे अज़कार पढ़ते हैं अगर वह जुह्र मग़रिब और इशा के फर्ज़ों के बाद भी इन अज़कार के पढ़ने का मामूल बनाएं तो अहनाफ के यहाँ मना भी नहीं है। याद रहे बाहमी इत्तिहाद बहुत ज़रूरी है।

प्रश्नः कुछ लोगों का कहना है की फर्ज नमाज़ों के बाद इज़तिमाई (एक साथ) दुआ मांगना बिदअत है, सही बात क्या है?

उत्तरः यह बात भी सऊदी रिटर्न लोग कहते हैं इसलिए कि वहां फर्ज़ नमाज़ों के बाद इजतिमाई दुआ का मामूल नहीं है, हाँ हदीस में भी यह बात नहीं मिली कि सहाब–ए–किराम इमाम के साथ इजतिमाई दुआ मांगा करते थे। लेकिन यह बात हदीस से साबित है कि फर्ज़ नमाज़ के बाद दुआ क़बूल होती है इस लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाब–ए–किराम अलग अलग ज़रूर दुआ मांगते रहे होंगे। हाजत की नमाज़ और इस्तिख़ारे की नमाज़ों के बाद दुआ का मांगना साबित है। यह बात

भी मुसल्लम है कि कुर्आन व हदीस की दुआएं इनसानी हाजतों का अहाता करती हैं फिर उनमें जो बरकात हैं वह हमारी अपनी दुआओं में नहीं, और हमारे बर्रेसग़ीर (उप महाद्वीप) के 98 फीसद लोग अरबी ज़बान से ना बलद हैं इसलिए ऐसा लगता है कि किसी बुज़ुर्ग ने कुर्आन व हदीस की दुआएं मांगी होंगी साथ में उस के मुकतदियों ने भी हाथ फैला कर अपने इमाम की दुआओं पर आमीन कही होगी इस तरह इजतिमाई दुआ का रिवाज पड़ा, आज भी ऐसा ही है अक्सर नमाजी कुर्आन व हदीस की बा बरकत और जामेअ दुआओं से ना बलद हैं वह चाहते हैं कि कोई। मस्नून दुआएं मांगे और वह आमीन कह कर उस की दुआ में शामिल हो जाएं पस हिन्दोस्तान में फर्ज नमाज़ों या अलग से इजतिमाई दुआओं का ज़रूरतन मामूल है। तो इसमें कोई हरज नही है, लिहाजा इजतिमाई दुआ मज़कूरा ज़रूरत के तहत मांगी जाए तो जाइज़ है मगर इसे जरूरी समझा जाए तो बेशक बिदअत है। जो इजतिमाई दुआ में शरीक नहीं होना चाहता उस पर नकीर न करें और उम्मत में इत्तिहाद बाकी रखें।

प्रश्नः हमारे घर पर साप्ताहिक इज्तिमा होता है, जिसमें हर मसलक की बहने आती हैं, जो अल्लाह का शुक्र है कि बहुत उदार हैं। नमाज़ के बारे में कुछ मसले ऐसे हैं जिन्हें कुछ बहनें मानने को तैयार नहीं हैं। एक मसला यह है कि पैर औरत के सतर में हैं या नहीं। अहले हदीस बहनों का कहना है कि नमाज़ में पैर ढकना फ़र्ज़ है। दूसरा मसला मर्दों और औरतों की नमाज़ में फ़र्क का है। हम औरतें सजदा सिमट कर करती हैं और हमारा तर्क यह है कि यह परदे के लिए ज़्यादा सही तरीक़ा है, जब कि अहले हदीस बहनें बुख़ारी की इस हदीस का हवाला देती हैं– "नमाज़ उस तरह पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ते देखा है। बराहे करम इस सिलसिले में हमारी रहनुमाई करें।

उत्तरः आप अपने घर पर साप्ताहिक इज्तिमा करती हैं जिसमें अलग–अलग मसलक की बहनें आती हैं। इज्तिमा के ज़रिए आप दीनी मालूमात में इज़ाफ़ा करने और अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म और तालीमात जानने की कोशिश करती हैं इसके लिए मुबारकबाद।

फ़िक़्ही मामलों के बारे में यह बात समझ लेनी चाहिए कि फ़िक़्ह के इमामों ने शरई दलीलों (कुर्आन, सुन्नत, इज्तिहाद, क़यास) की रौशनी में नियम तैयार किये हैं। इनके बीच कुछ मामलों में जो फ़र्क़ है वह हक़ और बातिल का नहीं है, बल्कि फ़र्क़ यह है कि किसने किसको ज़्यादा मुनासिब समझा। इसलिए जो लोग सीधे कुर्आन व सुन्नत से नियम निकालने और जहां कुर्आन व सुन्नत में सीधे तौर पर कोई रहनुमाई मौजूद नहीं है वहां इज्तिहाद करने की सलाहियत नहीं रखते उनके लिए बेहतर यही है कि फ़िक़्ह के इमामों में से किसी एक इमाम पर भरोसा करें। कुछ मसलों में मतभेद

को झगड़े का कारण नहीं बनाना चाहिए।

जहाँ तक औरतों की नमाज़ का मामाला है तो बदन के सतर के क़ाबिल हिस्सों को छिपाना नमाज़ की शर्त में से है। अल्लाह का इरशाद है– "ऐ आदम की संतान हर इबादत के मौक़े पर अपनी ज़ीनत (शोभा) को अपनाओ" (क़ुर्आन–7:31)। हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि इस आयत में ज़ीनत से आशय है लिबास। नमाज़ में औरत को पूरा बदन छिपाना ज़रूरी है– "और अपनी ज़ीनत न दिखाएं सिवाय उसके जो खुद नज़र आ जाए"। (क़ुर्आन 24:31) ख़ुद नज़र आ जाने वाले अंग क्या है इसके बारे में फ़क़ीहों के बीच मतभेद हैं।

इमाम अहमद बिन हम्बल का मानना है कि केवल चेहरा ही नज़र आ सकता है। इमाम मालिक और इमाम शाफ़ई के अनुसार चेहरा और हथेलियां दोनों अपवाद हैं। इमाम अबू हनीफ़ा का मानना है कि चेहरा और हथेलियों के साथ पैर भी सतर में शामिल नहीं है।

दूसरी बात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमाज़ के तरीक़े के बारे में हदीसों से मालूम होता है कि आप सज्दे में अपनी बांहों को पेट और रानों से अलग रखते थे।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ि0 कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सजदा करते थे तो अपने दोनों हाथों को इतना अलग रखते थे कि बकरी का छोटा बच्चा आपके नीचे से निकल सकता था। सवाल यह है कि क्या सज्दे का यही तरीक़ा औरतों के लिए भी है या इसमें कोई अन्तर है?

फ़क़ीहों की राय है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा मर्दों के लिए है औरतों के लिए बेहतर है कि वे सिमट कर और अपनी रानों को पेट से लगाकर सज्दा करें।

अल–मौसूअतुल फ़क़्हीया में है "औरत सजदे में अपने बाजुओं को ज़मीन पर बिछाएगी अपने पेट को अपनी रानों से मिलाएगी और सिमट कर सजदा करेगी। परदे के हिसाब से यह उसके लिए बहेतर है। उसके लिए मर्दों की तरह अपने बाजुओं को पेट से अलग रखना सुन्नत नहीं है"।

केवल हनफ़ी फ़क़ीहों का ही नहीं, बल्कि शाफ़ई की भी यही राय है। इमाम नबवी लिखते हैं इमाम शाफ़ई और उनके साथियों ने लिखा है"मसनून यह है कि सज्दे में मर्द अपनी कोहनियों को अपने पहलू से दूर रखें और अपने पेट को अपनी रानों से उठा कर रखे और औरत सिमट कर सज्दा करे।" इमाम नववी रह0 ने इस सिलसिले में हज़रत अली रज़ि0 का एक असर भी नक़ल किया है। जब नमाज़ अहले हदीस तरीक़े पर हो जाती है और हनफ़ी तरीक़े पर भी तो उदार बहनों को चाहिए कि एक दूसरे को सहन करें और मेलमिलाप बाक़ी रखें। ❑❑

डॉ० मेलर की राय कुर्आन मजीद के बारे में

—जावेद अख़तर नदवी

कनेडा के एक मुस्तशरिक़ ने जिसका नाम मेलर है, चाहा कि वह कुर्आने करीम का मुताला करे ताकि उसके अन्दर कुछ ऐसी ग़लतियां तलाश करे जो उसे ईसाई काज़ को तकवीयत बहम पहुँचाने में और दूसरों को उसकी तरफ दावत देने में मुआविन व मददगार साबित हों और अपने अफ़कार व नजरियात में उनको हवाले के तौर पर पेश करे, जिनको वह अपने मानने वालों और पैरवी करने वालों के सामने बराबर पेश करता आ रहा है।

पहली बार कुर्आने करीम के पढ़ने से पहले उसके दिल में ख़्याल था कि कुर्आन मजीद मे रेगिस्तान, सहरा बे आब व गयाह मक़ामात और बदवी ज़िन्दगी के बारे में बताया गया होगा और यही सब तफ़सीलात होंगी, इसलिए कि कुर्आने मजीद उसकी फिक्र के मुताबिक़ महज़ एक ऐसी किताब है जो दीनी और मजहबी है और ऐसे माहौल में यह किताब उतरी जो सादा और बदवी माहौल था और उसके नुजूल (उतरने) पर 1400 साल से ज़्यादा का अरसा बीत चुका है।

उसका यह भी ख़्याल था कि उसमें ऐसे वाक़िआत और मुश्किल हालात भी मिलेंगे जो आखिरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पेश आए जिन्होंने उनकी ज़िन्दगी में मसाइल (आपत्तियों) के पहाड़ तोड़ दिये और उनको ज़ाती तौर पर बड़ा नुकसान पहुंचा जैसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी हज़रत ख़दीजा का इन्तिक़ाल, बेटियों और बेटों की वफ़ात, मुशफ़िक़ चचा की रेहलत (निधन) और मुख़लिस सहाबा की मुफ़ारकत लेकिन इस तरह की कोई भी चीज़ उसको कुर्आने मजीद में नहीं मिली बल्कि उस वक्त वह हैरान रह गया जब उसने देखा कि कुर्आने मजीद में हज़रत मरयम बुतूल अलैहिस्सलाम के नाम से मुकम्मल सूर—ए—मरयम मौजूद है जिस हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम और उनके बेटे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मकाम व मरतबे और बड़ाई व फज़ाइल को बयान किया गया है, और यह अन्दाज़ तो ईसाई किताबों में भी नहीं पाया जाता है, उसके बिल मुक़ाबिल उसको कोई ऐसी सूरत नहीं मिली जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चहीती बीवी हज़रत आइशा, बेटी हज़रत फ़ातिमा, या महबूब बीवी हज़रत खदीजा के नाम से हो।

इसी के साथ उसने यह भी देखा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम पचीस बार कुर्आने पाक में आया है, जब कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन पर यह किताब नाज़िल हुई का सिर्फ पाँच बार नाम आया है, इससे उसकी हैरत में और इज़ाफ़ा हो गया, मेलर कुर्आने क़रीम को ग़ौर व

फिक्र से पढ़ता रहा ताकि उसको कुछ ऐसी लग़ज़िशें (भूल–चूक) नज़र आ जाएं जो उसको ईसाईयत के तअल्लुक़ से अपने ख़्यालात की मदद में तआउन (मदद) कर सकें लेकिन वह कुर्आने करीम की इस आयत को पढ़ा तो हैरान रह गया– अनुवाद : "भला यह कुर्आन में गौर क्यों नहीं करते? अगर यह खुदा के सिवा किसी और का कलाम होता तो इसमें बहुत सा इख़्तिलाफ़ पाते" (अन्निसा 5–82)।

मेलर इस आयत को पढ़ने के बाद कहता है कि दुनिया में कोई ऐसा मुसन्निफ़ व मुअल्लिफ़ (लेखक) नहीं जो इस जुरअत (साहस) व हिम्मत और बे बाकि व बे ख़ौफ़ी के साथ कहे कि उसकी किताब हर तरह की गलतियों से साफ और महफूज़ है लेकिन कुर्आने मजीद इस के बरख़िलाफ़ खुल्लम खुल्ला कहता है कि उसमें कोई गलती नहीं बल्कि उससे आगे पढ़ कर इन्सानों को चैलंज करता है कि वह उसमें कोई गलती निकाल कर दिखाएं और वह भी बता दिया कि वह चाहे जिस क़दर भी कोशिश कर ले इस मक़्सद में कभी काम्याब नहीं हो सकता।

यह कोई नई बात नहीं कि आज भी यह चैलेंज बाकी है जैसा कि अहले अरब जो अरबी ज़बान व अरब का ऐसा ज़ौक़ रखते थे कि उन्हीं की ज़बान में कुर्आने मजीद नाज़िल हुआ और वह अपने को अरब (साफ और फ़सीह बोलने वाला) और दूसरों को अ़जम (गूंगा, बेज़बान) कहते थे उनके बड़े–बड़े नामी गिरामी और चोटी के माहिरीन जबान अदब ने यह कोशिश कर ली मगर एक छोटी सी आयत भी बना कर पेश नही कर सके।

डॉ0 मेलर कहते हैं कि जब हम पैग़म्बरे इस्लाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तय्यिबा में गौर करते हैं तो देखते हैं कि उन्होंने तने तन्हा वह इन्किलाब बरपा किया जो तारीख़े इन्सानी में कोई भी नहीं कर सका और यह दावा सही नहीं कि शयातीन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद करते थे और वही नऊजुबिल्लाह रसूले ख़ुदा के पास कुर्आन मजीद लेकर आते थे। अल्लाह तआला खुद फ़रमाते हैं अनुवादः और इस (कुर्आन) को शैतान लेकर नाज़िल नहीं हुए यह काम न तो उनको सजावार है और न वह उसकी ताकत रखते हैं और (आस्मानी बातों के) सुन्ने के मकामात से अलग कर दिये गये हैं, (अशशुअरा 210–212) और आगे फरमाते हैं "और जब तुम कुर्आन पढ़ने लगो तो शैतान मरदूद से पनाह माँग लिया करो" (अन्नहलः 98)।

डॉ0 मेलर कहता है कि क्या किसी ने यह देखा है कि किसी तालीफ़ व तस्नीफ़ (लिखी पुस्तक) में शैतान का यह तरीक़ा होता है? और क्या शैतान कोई किताब लिखता है तो यूं कहना कि इस किताब के पढ़ने से पहले तुम मुझ से पनाह माग लिया करो।

इसमें कोई शक नहीं कि कुर्आन पाक में इस तरह की बेशुमार आयात पायी जाती हैं जिनमें इस तरह के शुब्हा रखने वालों के लिए वाफर जवाबात हैं, कुर्आने

मजीद की आयत में से जिन आयतों ने डॉ0 मेलर को अपनी तरफ मुतवज्जेह किया उनमें एक आयत यह भी है जो मुसलमानों और यहूद व नसारा के बाहमी तअ़ल्लुक़ात और दोस्ती के बारे में है कुर्आने करीम कहता है कि यहूद और मुश्रिकीन मोमिनों से सब से ज़्यादा दुशमनी रखने वाले हैं और यह दुशमनी आज तक चली आ रही है, और हालात व वाकिआ़त इस पर शाहिद हैं, कुर्आने मजीद कहता है "ऐ पैग़म्बर तुम देखोगे कि मोमिनों के साथ सब से ज़्यादा दुशमनी करने वाले यहूदी और मुश्रिकीन हैं और दोस्ती के लिहाज़ से मोमिनों के क़रीबतर उन लोगों को पाओगै जो कहते हैं कि हम नसारा हैं यह इसलिए कि उनमें आ़लिम भी हैं और मशाइख़ भी और वह तकब्बुर नहीं करते (अलमाइदाः 82)

डॉ0 मेलर कहता है कि यह वाकिअतन बहुत बड़ा चैलंज है, यहूद के इख्तियार मे यह बात थी कि वह मुआमले को बदल देते, मुसलमानों के तअ़ल्लुक से अपनी मुहब्बत का इज़हार करते, उनसे दोस्ती और मुहब्बत रखते और कुछ बरसों के लिए उस पर तकल्लुफन (बनावट) ही सही कायम रहते और यह साबित करते कि कुर्आने करीम में हमारे तअल्लुक़ से सही नहीं कहा गया, हम तो मुसलमानों के दोस्त और हमदर्द हैं उनके साथ सारे तअ़ल्लुकात रखते हैं, उनसे हम मुहब्बत करते हैं, उनकी मुहब्बत हमारे दिलों में है यह मुमकिन था, और इस तरह कुर्आने मजीद की आयत की मुख़ालफत कर सकते थे और मुसलमानों से कह सकते थे देखों हम तुम्हारे साथ अच्छे मुआमलात रखते हैं, तुम से मुहब्बत करते हैं, तुम्हारी खुशी और ग़म में शरीक़ होते हैं, मगर तुम्हारी किताब कुर्आन मजीद में यह लिखा हुआ है कि हम यहूद तमाम लोगों में तुम से ज़्यादा अदावत रखने वाले हैं इस तरह कुर्आन मजीद में गलत बात कही गई है लेकिन उन लोगों ने ऐसा कभी नहीं किया और न ऐसा कर सकते हैं। तो इससे मालूम हुआ कि यह कुर्आन मजीद उसी जात का नाजिल किया हुआ है जो ग़ैब की तमाम बातों को अच्छी तरह से जानने वाला है और उसके इल्म से काइनात (जगत) की छोटी बड़ी कोई भी चीज़ बाहर नहीं है।

इसी के साथ डॉ0 मेलर का यह भी कहना है कि कुर्आने मजीद के अन्दर एक ऐसी इम्तियाज़ी सिफत पाई जाती है जो किसी दूसरी आसमानी किताब में नहीं पाई जाती वह यह कि कुर्आन अपने पढ़ने वालों को सही और हक़ मालूमात फराहम करता है और कहता है कि तुम इससे पहले यह बातें नहीं जानते थे लेकिन हम तुम्हारे सामने बयान कर रहे हैं, मुखतलिफ़ अक्वाम व मिलल तहजीब व तमद्दुन, हुकूमतों और सलतनतों के हालात बयान करता है और उसमें ज़र्रा बराबर कमी बेशी नहीं करता जैसा कि हम कुर्आने करीम की इस आयत में देखते हैं कि कुर्आन खुद कहता है ऐ मुहम्मद यह बातें अख़बारे गैब में से हैं जो हम तुम्हारे पास भेजते हैं और वह जब वह लोग अपने क़लम

(बतौरे कुरआ) डाल रहे थे कि मरयम का मुकफ्फिल (संरक्षक) कौन बने तो तुम उनके पास नहीं थे और न उस वक्त ही उनके पास थे जब वह आपस में झगड़ रहे थे (आले इमरानः 44) और एक जगह कुर्आन मजीद कहता है (यह हालत) मिन जुम्ला ग़ैब की खबरों से हैं जो हम तुम्हारी तरफ भेजते हैं और इससे पहले न तुम्हीं उन को जानते थे और न तुम्हारी क़ौम ही उनसे वाकिफ थी तो सब्र करो कि अंजाम परहेज़गारों ही का (भला) है।

सूर–ए–हूदः 49)

❖❖❖

इस्लाम विरोधी प्रश्नों.....

रोग लग जाते हैं। (सुननते नबवी और जदीद साइंस)

महिलाओं के पारदर्शी (बारीक) वस्त्र पवित्र कुर्आन में हैः–

"ऐ आदम की संतान! हमने तुम पर वह वस्त्र उतारा जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाए, और उतारा हमने इज़्ज़त का पहनावा और परहेज़गारी का लिबास, ये सब तुम्हारे लिए बेहतर है"। (सूरः ऐराफ–26)

पवित्र हदीस में हैः–

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है कि वह महिलाएं नर्कवासी हैं जो कपड़े पहनकर भी नंगी रहती हैं, दूसरों को रिझाती हैं, स्वयं दूसरों पर रीझती हैं, ये औरतें जन्नत में न जाएंगी, न जन्नत की खुशबू पांएगी, हालांकि जन्नत की खुशबू बहुत दूर से आती है"।

(रियाजुस्सालिहीन)

इसी प्रकार की एक अन्य हदीस, में हैः– एक बार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मिस्र की बनी हुई पारदर्शी (बारीक) मख़मल आई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ हिस्सा फाड़ कर हज़रत दह्या कलबी रज़ि0 को दिया और कहा कि इसमें से एक हिस्सा फाड़ कर तुम अपना कुर्ता बना लो और एक भाग अपनी पत्नी को ओढ़नी बनाने हेतु दे दो, मगर उनसे कह देना कि उसके नीचे और भी कपड़ा लगा लें, ताकि शरीर की बनावट अन्दर से न झलके"।

(अबूदाऊद)

झलकने वाले वस्त्रों से महिलाओं की अस्मिता व सम्मान पर आँच आती है और उनके अन्दर जो शर्म व हया का अनमोल रत्न है वह दाग़दार होता है। उसके अतिरिक्त परदर्शी वस्त्र धारण करने से अनेक हानियाँ हैं।

पारदर्शी वस्त्र धारण करने से नुकसान–

नवीन शोधकर्ताओं ने पारदर्शी कपड़े पहनने के कई नुक़सान बताए हैं, उसमें एक ये है कि सूरज में मौजूद अल्ट्रावाइलेट किरणें भीषण गर्मी में त्वचा और शरीर के लिए बहुत ही हानिकारक होती हैं, यदि वस्त्र मोटा हो तो ये किरणें वस्त्र को भेद नहीं पातीं और बाहर ही रुक जाती हैं, तथा यदि वस्त्र पारदर्शी हो तो ये किरणें त्वचा को अत्यधिक हानि पहुँचाती हैं।

डॉ0 लेड बेटर जो आध्यात्मिकता के लिए बहुत बड़े शोधकर्ता हैं, के अनुसार जिस पहनावे से महिलाओं के शरीर झलकें उस शरीर से मैंने अशुद्ध और गन्दी हलरों को निकलते हुए देखा है। (तसव्वुराते इस्लाम)

❑❑

औरंगज़ेब और धार्मिक स्वतंत्रता

—मतीन तारिक़ बाग़पती

धर्म का मामला शीशे की तरह है बड़ा नाज़ुक़, बड़ा स्वाभिमानपूर्ण। ज़रा सी खनक से उसमें बल पड़ जाता है, इसलिए उसकी रक्षा बड़ी सतर्कता व सावधानी से की जाती है। क़दम–क़दम पर ख़याल रखा जाता है कि कहीं उसमें ठेस न लग जाए। फिर भला ज़बरदस्ती कौन अपना धर्म बदलने को तैयार हो सकता है लेकिन अफ़सोस यह है कि औरंगज़ेब पर यह ज़बरदस्त इल्ज़ाम है कि जब तक वह सवा मन जनेऊ नहीं उतरवा लेता था उस वक़्त तक खाना खाने नहीं बैठता था, जिसका अर्थ यह है कि रोज़ चालीस–पचास हज़ार हिन्दुओं को या तो मुसलमान बनाया जाता था या क़त्ल कर दिया जाता था। लेकिन इस इल्ज़ाम की काट तो इस तरह हो जाती है कि आज भी हिन्दुओं की इस देश में आबादी बहुत अधिक है और मुसलमानों की जनसंख्या खुद औरंगज़ेब के दौर में भी एक करोड़ से आगे नहीं बढ़ी।

अब रही यथार्थ की खोज तो इसके लिए हम अपनी राय नहीं, बल्कि कुछ सम्मानित ग़ैर–मुस्लिम आचार्यों की न्यायसंगत राय प्रस्तुत करते हैं, जिससे अंदाज़ा लगाया जा सके कि यद्यपि धर्म उसके जीवन का बड़ा अटूट अंग था, लेकिन तंगदिली उसे छू तक नहीं पायी थी। मात्र धार्मिक भेद के आधार पर किसी को कष्ट व तकलीफ़ पहुंचाना उसे किसी भी स्थिति में बर्दाश्त न था।

बंगाली इतिहासकार 'सर यदुनाथ सरकार' "तारीख़े औरंगज़ेब" (औरंगज़ेब का इतिहास) में लिखते हैं कि "औरंगज़ेब का इतिहास भारत के साठ साल का अत्यंत स्वर्णिम इतिहास है। उसने किसी हिन्दू को जबरन मुसलमान नहीं बनाया, न अमन की हालत में किसी हिन्दू की जान ली। वह उदारता में किसी प्रकार भी अपने अग्रगामी मुग़ल बादशाहों से कम नहीं।"

इसके अतिरिक्त और व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि "बनारस की मस्जिद 'ज्ञानवापी' के संबंध में कहा जाता है कि औरंगज़ेब ने मंदिर तोड़ कर उसे बनवाया था। उसकी हक़ीकत यह है कि उस जगह कोई मंदिर उसके ज़माने में न था, बल्कि अकबर के 'दीने इलाही' की एक संस्था थी जिसे सन् 1627 ई0 में शाहजहां ने तोड़कर मस्जिद बनवा दी थी और उसका ऐतिहासिक नाम 'ऐवाने शरीअत' रखा था।" (दावत)

'हेमिल्टन' नाम का एक अंग्रेज़ पर्यटक औरंगज़ेब आलमगीर के दौर में भारत आया था। वह अपने सफ़रनामे में विविध शहरों का चश्मदीद अनुभव अंकित करते हुए शहर ठठ के बारे में लिखता है– "हुकूमत का परिपूर्ण धर्म 'इस्लाम' है। किन्तु जनसंख्या में यदि दस हिन्दू हैं तो एक मुसलमान

है। हिन्दुओं के साथ धार्मिक उदारता पूरी तरह बरती जाती है। वे अपने व्रत रखते है, पूजा–पाठ करते हैं और त्योहारों का उसी तरह मनाते हैं जैसे कि अगले ज़माने में मनाते थे जब कि बादशाहत व शासन हिन्दुओं का था''।

(सफ़रनामा हेमिल्टन भाग–1 पृष्ठ 127 से 128)

इसी सफ़रनामा में 'सूरत' शहर का उल्लेख करते हुए लिखा है ''उस शहर में अनुमानतः सौ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं, लेकिन उनमें कभी कोई झगड़ा उनकी आस्थाओं व पूजा पद्धति के बारे में नहीं होता। प्रत्येक को पूरा अधिकार है कि जिस प्रकार चाहें अपने तरीक़े से अपने पूज्यों व देवी–देवताओं की उपासना करे। केवल धर्म की भिन्नता के आधार पर किसी को कष्ट व तकलीफ़ पहुंचाना इन मुस्लिम लोगों के स्वभाव में किंचित मात्र भी नहीं है।'' (सफ़रनामा हेमिल्टन भाग–1 पृष्ठ 162)

एक दूसरे फ्रांसीसी पर्यटक 'डॉ0 बरनियर' दिल्ली के सूरज ग्रहण के स्नान और पूजा–पाठ का दृश्य देखते हुए लिखते हैं ''मुस्लिम शासकों की शासन प्रणाली का यह एक अंग है कि वह हिन्दुओं की परंपराओं व प्रथाओं में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते और उन्हें अपनी धार्मिक परंपराओं को पूरा करने की पूरी स्वतंत्रता देते हैं।''

डॉ0 बरनियर के वक्तव्य से इस बात की भी पुष्टि होती है कि उस समय भारत में लगभग 25 हज़ार ईसाई आबाद थे, जो अपनी धार्मिक परंपराओं को स्वतंत्र ढंग से अदा करते थे। स्वतंत्रता की यह स्थिति थी कि वह अपने धर्म का प्रचार–प्रसार खुलेआम कर सकते थे उनके पादरियों ने अपनी पाठशालाएं और मठ भी बना लिए थे। (रिसाल–ए–मौलीवी, रबीउस्सानी, सन् 1959 ई0 पृष्ठ–33)।

बलपूर्वक मुसलमान बनाने के बारे में मिस्टर टी0डब्लू0 अरनॉल्ड लिखते हैं– ''औरंगज़ेब के दौर के इतिहास की पुस्तकों में जहां तक मैंने तलाश किया है, बलात, मुसलमान करने का उल्लेख कहीं नहीं मिलता।'' (प्रीचिंग ऑफ़ इस्लाम, पृ0 379)

इतिहासकार इन्फ़िस्टन ने अपनी उत्कृष्ट रचना ''तारीख़े हिन्द'' में लिखा है– ''यह प्रमाणित नहीं होता कि किसी हिन्दू को उसके धर्म के कारण औरंगज़ेब ने क़त्ल, कैद या जुर्माना की सज़ा दी हो या किसी व्यक्ति पर ऐलानिया अपने धर्म के अनुसार पूजा–पाठ करने के कारण एतिराज (आपत्ति) किया हो''।

अन्य देशवासियों की आंखों देखी गवाहियों और उल्लेखों के बाद अब अपने देश के कुछ न्यायनिष्ठ हिन्दू विद्वानों के बयान भी पेश करते हैं, ताकि उसकी रौशनी में औरंगज़ेब आलमगीर की सही तस्वीर सामने आ सके।

एक प्रसिद्ध आर्य समाजी प्रचारक 'मेहता जैनमी जी' बी0ए0 अपनी किताब ''औरंगज़ेब की ज़िन्दगी का रोशन पहलू'' में हिन्दुओं को सताने और उन पर सख़्ती करने के

इल्ज़ाम का खंडन करते हुए लिखते हैं कि "यह सरासर झूठा और बेबुनियाद इल्ज़ाम है" इस क्रम में उन्होंने आलमगीर का एक फ़रमान नक़ल किया है ,जिसकी अस्ल कॉपी 'रायल एशिएटिक सोसायटी, बंगाल' के पास सुरक्षित है– (शाही फ़रमान, तारीख़ 28 फ़रवरी, सन् 1619 ई0)।

"हमारी शरीअत के अनुसार यह निश्चित पा चुका है और फ़तवा दिया जा चुका है कि प्राचीन मंदिरों को हरगिज़ न तोड़ा जाए। हमारे शाही दरबार में यह ख़बर सुनी गयी है कि कुछ अधिकारियों ने हिन्दुओं को, जो बनारस में रह रहे हैं, परेशान कर रखा है और उसके आसपास के लोगों और विशेष कर उन ब्राह्मणों को उनके प्राचीनतम मूर्तिगृह से निकालना चाहते हैं। इसलिए हमारा शहंशाही फ़रमान यह है कि आप उन अधिकारियों व हाकिमों को हिदायत कर दें कि भविष्य में कोई स्थानीय प्रशासक क़ानून के ख़िलाफ़ किसी भी ब्राह्मण या अन्य दूसरे हिन्दू को जो उन स्थानों पर रहते हैं या आचार्य हैं, न तो किसी प्रकार का कष्ट या तकलीफ़ दें और न उनके कारोबार में हस्तक्षेप करके बाधक हों।"

इस वृतांत को 'बाबू निरंजन सेन' बी0ए0, एल0एल0बी0 ने' बनारस सिटी' नाम की अपनी रचना में इस तरह नक़्ल किया है– "औरंगज़ेब को ख़बर पहुंची कि बनारस के कुछ हाकिम ब्राह्मणों को सताते हैं, तो उसने बनारस के गवर्नर अबुल हसन को फ़रमान भेजा कि हमारी शरीअत का हुक्म है कि मंदिर न ढाये जाएं और न उनके पुजारियों पर सख़्ती की जाए। अतः हुक्म दिया जाता है कि कोई व्यक्ति ब्राह्मण या किसी हिन्दू पर किसी प्रकार का दबाव न डाले।"

एक ही विषय पर दो गवाहियां उसके सच्चा होने का ठोस प्रमाण हैं। इससे पता चलता है कि औरंगज़ेब आलमगीर के दौर में मंदिरों की रक्षा की जाती थी। अगर उसके विरुद्ध वह अमल करता तो आज हिन्दुस्तान में शायद एक मंदिर भी दिखायी न देता। प्रसिद्ध इस्लामी इतिहासकार मौलाना शिबली नोमानी इस सिलसिले में लिखते हैं–

"आलमगीर दक्षिण में 25 साल तक रहा। उसके पास–पड़ोस में हज़ारों बुतख़ाने और मंदिर मौजूद थे, लेकिन इतिहास में एक शब्द भी नहीं मिलता कि उसने किसी बुतख़ाने को तोड़ने की नीयत भी की हो।"

"एलोरा–अजन्ता के मशहूर मंदिर में सैकड़ों बुत और तस्वीरें हैं। औरंगज़ेब आलमगीर उस क्षेत्र में एलोरा से दो मील की दूरी पर ख़ुल्दाबाद नामक शहर में दफ़न है। बड़े–बड़े इस्लाम के मानने वाले बुज़ुर्गों के मज़ार (क़ब्र) यहां हैं, जो आलमगीर औरंगज़ेब से पहले गुज़रे हैं। किन्तु ये बुत और तस्वीरें अपनी जगह आज तक सुरक्षित हैं।" (औरंगज़ेब आलमगीर, लेखन शिबली, पृ0 59)

(कान्ति सप्ताहिक 28.10.12)

❖❖❖

कब्ज रहता है तो इस्तेमाल करें नारियल का तेल

भागमभाग भरी इस ज़िन्दगी में अक्सर लोग ये जानते हुए भी कि जंक फूड में मैदे, पनीर, मक्खन, नमक और चीनी का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल होता है, जंक फूड को बहुत ज़्यादा महत्व देते हैं। इससे सेहत संबंधी कई समस्याएं सामने आती हैं। इन समस्याओं में सबसे ऊपर है पाचन की समस्या।

इसके अलावा दवाओं के इस्तेमाल, गर्भवती महिलाओं के हार्मोन के असंतुलन और व्यायाम न करने से होने वाली कब्ज जैसी समस्याएं आम हैं। अपच से पेट में दर्द, चिड़चिड़ापन और दैनिक कार्यों में एकाग्रता की कमी जैसी कई मुश्किलें आती हैं। कब्ज से तो कालोरेक्टल कैंसर होने की भी आशंका हो सकती है।

कब्ज में फायदेमंद

लेकिन कब्ज या अपच जैसी बीमारियों को रोकने का बहुत ही आसान सा समाधान है। खाना बनाते समय अगर तेल पर ध्यान दिया जाए तो यह समस्या बहुत आसानी से हल हो सकती है।

नारियल का तेल थोड़े मीठे स्वाद के कारण खाना बनाने में इसका इस्तेमाल बहुत कम लोग करते हैं। लेकिन शायद आपको यह जान कर ताज्जुब होगा कि अगर आपको कब्ज या पाचन संबंधी अन्य तकलीफें रहती हैं तो नारियल का तेल आपकी तकलीफों को खत्म कर सकता है।

पाचनशक्ति रहे दुरूस्त

दरअसल नारियल तेल में मीडियम चेन फैटी एसिड होता है, जो अन्य वसायुक्त तेलों के मुकाबले ज्यादा घुलनशील है और इसी वजह से नारियल तेल को पचाने में हमारे शरीर को काफी आसानी होती है। दूसरे रिफाइंड तेल में लॉन्ग चेन फैटी एसिड होते हैं, जिन्हें पचाने में काफी समय लगता है। इसलिए सलाद ड्रैसिंग जैसे व्यंजन बनाते समय नारियल तेल की कुछ बूंदों का उपयोग सेहत के लिए तो फायदेमंद साबित होगा ही, उस व्यंजन का स्वाद भी और बेहतर हो जाएगा।

दूसरे वसायुक्त तेल पाचन क्रिया में बहुत अधिक समय लेते हैं, लेकिन नारियल का तेल अन्य वसा के मुकाबले जल्दी पचता है, और तत्काल ऊर्जा देता है। इस तेल को खाने से सुस्ती भी नहीं आती। इसके अलावा इसमें फाइबर की मात्रा बहुत ज़्यादा होती है और यह पोषक तत्वों से भी भरपूर होता है।

संक्रमण से बचाए

नारियल तेल में एंअी माइक्रोबियल गुण होते हैं, जो अपच की समस्या से लड़ने में मदद करते हैं, ये विटामिन, खनिज लवण और अमीनो एसिड को अवशोषित करने में सक्षम होते हैं। वर्जिन नारियल तेल में एंटी बैक्टीरियल, एंटी फंगल और

एंटी वायरल एजेंट्स होते हैं, जो पाचन क्रिया को बढ़ाते हैं और कई तरह के संक्रमण को रोकने में मदद करते हैं।

कई दर्द में राहत दे

कब्ज की समस्या और खून में कोलेस्ट्राल का स्तर कम करने के अलावा वर्जिन तेल कई संक्रमणों जैसे कि उल्टी, खांसी, घाव को कम करने, कान के दर्द, निमोनिया, बच्चों के डायपर से होने वाले रैश को कम करने, मधुमेह, दाद और हेपेटाइटिस को रोकने में अहम भूमिका निभाता है।

❖❖❖

पैकरे-अख़्लाक़ ..... आप की सादगी का आम लोगों पर बे पनाह असर दिखाई देता था। आप में सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि आप सबको एक नज़र से देखते थे। आपके नज़दीक अपने पराये की तफरीक़ न थी। हमेशा सब की भलाई के लिए आप फिक्रमन्द रहा करते थे और अल्लाह के एक नेक बन्दे थे। कुर्आन में आया है कि "अल्लाह के नेक बन्दे तो वे लोग हैं जो झुक कर चलते हैं" यह ख़ूबी आप में मौजूद थी। आपके दिल में किसी बात के लिए तक़ब्बुर नाम की कोई चीज़ न थी। जो आम तौर पर लोगों मे अक्सर दिखाई देती है। यह इस बात की एक बहुत बड़ी दलील है कि आप की शख़्सियत अपने आप में निराली थी। इस सच्चाई को आपके क़रीब रहने वाले प्रायः सभी लोग तस्लीम करते हैं। सच ही कहा है–

बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो।
ज़बाने खल्क़ को नक़्क़ार–ए–खुदा समझो।।

इस दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि जो भी यहाँ आया है, एक दिन यहां से उसे जाना भी है। यह और बात है कि इस राज़ को कुदरत के अलावा कोई दूसरा नहीं जानता है कि कब किसको यहां से जाना है। सभी आने वालों के जाने का भी वक्त मुतअय्यन है। जिसका वक्त पूरा हो जायेगा, उसे हर हाल में यहां से जाना ही होगा। यह बात और है कि किसी के रुख़्सत हो जाने पर उसके अपने लोग दुनियावी फ़ायदे और नुक़सान को देख कर रोना–धोना शुरु कर देते हैं, जिससे पूरा माहौल ग़मगीन हो जाता है क्योंकि ये बातें इन्सानी फ़ितरत में दाख़िल हैं। यह हक़ीकत उस वक्त लोगों की समझ में नहीं आती है कि "हयात मुस्तआर का मदार क्या है" मगर समझने वाले इस हक़ीक़त को खूब अच्छी तरह समझते हैं।

कुर्आने पाक में भी आया है कि "इन्नल्लाह मअस्सा–बिरीन" यानि अल्लाह बेशक सब्र करने वालों के साथ है।

इस तरह हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0 की पुर मलाल वफ़ात के मौक़े पर हम सभी को सब्र का दामन पकड़ना चाहिए और उनकी मग्फ़िरत के लिए अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह उन्हें जन्नत अता फरमाये। आमीन

वैसे तो आपकी शख़्सियत के बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है लेकिन अब दिल की कैफ़ियत साथ नहीं दे रही है।

❖❖❖

अक़ाइद मंज़ूम

ख़ुदा एक है दिल से जानो यक़ीं
सिवा उसके माबूद कोई नहीं
हर इक शै पे हाकिम है क़ादिर है वह
हर इक जा पे हाज़िर है नाज़िर है वह
उसी ने किया ख़ल्क़ हर ख़ैर व शर
नहीं फ़ेले बद से वह राज़ी मगर
फ़रिश्ते हैं नूरानियों बे गुनाह
वह जिब्रील लाते थे हुक्मे इलाह
किताबे हैं जितनी ख़ुदा की तमाम
वह सब हक़ हैं उनमें नहीं कुछ कलाम
बुज़ुर्ग और हक़ गरचे हैं अंबिया
मगर सब से सरदार हैं मुस्तफ़ा
मुहम्मद नबी साहिबे मुअ़जिज़ात
अलैहिस्सलाम व अलैहिस्सलात
दिया हक़ ने उनको वह क़ुर्आने पाक
कि लारेबफ़ीह जिस की है शाने पाक
ख़ालीफ़ा भी तरतीब से चार हैं
वह हैं पेशवा और सरदार हैं
अबू बक्र व फ़ारूक़ उस्मां अ़ली
कि थे हमदमों जानशीने नबी
जो अस्हाब व औलाद व अज़वाज हैं
वह हैं पेशवा और सरताज हैं
सुवाले नकीरैन हैं गोर में
जियेगा हर इस हश्र के शोर में
लिया जायेगा फिर हिसाबो किताब
बक़द्रे अ़मल है अ़ज़ाबो सवाब
बजा औलिया की करामात है
नुजूमी की झूटी हर इक बात है

यादों के झरोखे से.....

मौलाना बड़े हंसमुख थे। इन्सानी फितरत के मुताबिक गुस्सा भी होते मगर उसको कभी अपने ऊपर हावी होने न दिया। मेरा उनसे एक अरसे का साथ रहा लेकिन मुझे न कभी डाँटा न फटकारा न कभी मुझ पर गुस्सा हुए।

मैं तबीयत की ख़राबी और शिक्षा सम्बन्धी कार्य को लेकर अधिकतर ऑफिस से अवकाश लेने पर विवश रहा हूँ मगर इसे लेकर मौलाना ने कभी मुझे टोका नहीं, बल्कि मुझे याद है कि जब मैंने आलमियत से फराग़त के बाद अल–आफिया ज्वाइन करने गया तो मौलाना ने आगे की पढ़ाई ज़ारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया था।

मौलाना की नज़र बड़ी परखी थी। वह लोगों को पहचानने और उनसे क्षमतानुसार काम लेने का हुनर जानते थे। विशेष रूप से नदवा और मदरसे के छात्रों से उन्हें बड़ी आशाएं थीं कि इस्लाम को शिखर पर यही लड़के पहुँचाएंगे।

आज वह जब हमारे बीच नहीं हैं तो हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि इस्लाम को चहुँओर फैलाने में जी–जान से जुट जाएं, यही उनके लिए हमारी ओर से सच्ची श्रद्धांजली होगी।

❖❖❖

प्रिय पाठकों की सेवा में

अल्लाह का शुक्र है कि "सच्चा राही" बारहवें वर्ष में है, इसके एक परचे की कीमत और सालाना चन्दा दोनों ही शुरु से लागत से कम रखे गये थे, इसका घाटा नदवा पूरा करता रहा है अब महंगाई के सबब घाटा बहुत ज़्यादा हो रहा है, इसलिए मई सन् 2013 के अंक से वार्षिक चन्दा ₹ 150 और एक परचे की कीमत ₹ 15 की जा रही है, अगरचि इससे भी पूरा घाटा कवर न होगा लेकिन काफी मदद मिल जाएगी।

इस इज़ाफे से हमारे पाठकों पर कुछ बोझ ज़रूर बढ़ेगा, हम उनसे अनुरोध करते हैं कि वह इसे सहन कर के अपने सच्चा राही के प्रकाशन में सहयोग दें। साथ ही जिन पाठकों के जिम्मे चन्दा बाकी है अपना चन्दा भेजने की कृपा करें।

हम अपने प्रिय पाठकों से यह भी दरख़्वास्त करते हैं कि अगर उनके नज़दीक हिन्दी भाषी भाइयों में इसका पढ़ा जाना मुफ़ीद (लाभ दायक) है तो इसके खरीदार बढ़ाने में सहयोग दें साथ ही हमारे पाठक अपने कारोबारी इश्तिहारात (विज्ञापन) सच्चा राही में दे कर उसका सहयोग करें, हम अपने लेखकों तथा पाठकों के परामर्शों का स्वागत करेंगे, प्रिय पाठक अपनी शिकायत अवश्य लिखें ताकि हम उनको दूर करने की कोशिश करें। ❑❑

जो आया उसको जाना है ज़रूर – जो दाना है नहीं करता ग़ुरूर
हमेशा याद रखता है वह उक़्बा – मुनक़्क़श उसके है तहतश्शऊर
ब गीती गर कसे पाइन्दा बूदे – अबुल क़सिम मुहम्मद जिन्दा बूदे
अबू बक्रो उमर फ़ारूक़ उस्मां – अ़लीये मुर्तज़ा हसनैन जी़शाँ
गये सब छोड़ कर आख़िर यह दुनिया – तुझे क्या है कि दिखता है तू हैराँ
कहा रबने यहां से सबको जाना है – मिला जो वक़्त उसी को याँ बिताना है

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

भारतीयों को टॉयलेट से ज्यादा मिसाइल की फिक्र

नोबोल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने कहा कि भारतीय जनता की रुचि टॉयलेट बनाने से अधिक मिसाइलों में है। सेन ने स्वच्छता के अभाव को कुपोषण की एक प्रमुख वजह बताते हुए कहा कि देश में आधी से अधिक आबादी के पास टॉयलेट नहीं है जो एक गंभीर समस्या है।

सेन ने यह टिप्पणी आईआईटी दिल्ली में भूख और पोषण के विषय पर आयोजित एक सेमिनार में की। उस समय मंच पर उनकेसाथ योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया भी मौजूद थे। आईआईटी, जेएनयू और दिल्ली विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्रों और शिक्षकों से खचाखच भरे हॉल में सेन ने कहा कि यह बड़े दुख की बात है कि देश में आज भी लाखों लोग मैला ढोने के काम में लगे हैं। लगभग आधी आबादी के पास टॉयलेट की सुविधा नहीं है जो एक गंभीर समस्या है। भारत की जनता टॉयलेट से ज़्यादा मिसाइलों में रुचि रखती है।

उल्लेखनीय है कि ग्रामीण विकास मंत्री जयराम रमेश ने भी कुछ दिन पहले ऐसा बयान देते हुए कहा था कि भारत में टॉयलेट से ज़्यादा मोबाइल और मंदिर हैं। सेन ने बच्चों में कुपोषण की समस्या का ज़िक्र करते हुए इस बात पर अफसोस जताया कि प्रस्तावित खाद्य सुरक्षा विधेयक के मसौदे में उनके लिए अलग से कोई प्रावधान नहीं किया गया है।

भारत ने खारिज किया इस्लामी सहयोग संगठन का सुझाव-

भारत ने इस्लामी सहयोग संगठन (ओआईसी) के उस सुझाव को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने जम्मू कश्मीर में मानवाधिकार की स्थिति आकलन के लिए अपनी एक टीम को वहां भेजने की अनुमति मांगी थी। भारत ने कहा, ऐसे मामले संगठन के अधिकार क्षेत्र में नहीं आते। इस संबंध में पाकिस्तानी विदेश मंत्री का प्रस्ताव दुष्प्रचार का प्रयास है।

विदेश मंत्रालय के आधि–कारिक प्रवक्ता ने कहा, 'भारत के आंतरिक मामलों या नियंत्रण रेखा की हालिया घटनाओं के संबंध में ओआईसी का कोई अधिकार क्षेत्र नही। हमने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि इस संबंध में यूएनएमओजीआईपी की कोई प्रासंगिता नहीं है'। उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी विदेश मंत्री के बयान में दिए गए दुष्प्रचार वाले प्रस्ताव न तो नए हैं, न ही मददगार। प्रवक्ता ने हाल ही में संपन्न ओआईसी संपर्क समूह की बैठक में जम्मू कश्मीर पर पाकिस्तानी विदेश मंत्री की टिप्पणी के बारे में सवाल किया गया था। पाकिस्तान का समर्थन करते हुए ओआईसी ने भारत से कहा था कि उसे जम्मू कश्मीर में मानवाधिकार स्थिति के आंकलन के लिए ओआईसी टीम, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार समूहों और मानवीय संगठनों को वहां जाने की अनुमति देनी चाहिए।

❑❑